INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

RAS

(Rajasthan Administrative Service)

प्रारंभिक परीक्षा हेतु

RAJASTHAN PUBLIC SERVICE COMMISSION

भाग – I

राजस्थान का इतिहास + कला एवं संस्कृति

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**RAS (Rajasthan Administrative Service) प्रारंभिक परीक्षा हेतु** " को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा "**Rajasthan State and Subordinate Services Combined Competitive Exams**" भर्ती परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें /*

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

Order Link - https://bit.ly/ras-pre-notes

WhatsApp Link- https://wa.link/bc7sin

मूल्य : ₹

संस्करण : नवीनतम

	राजस्थान का इतिहास	
1.	राजस्थान इतिहास के स्रोत	1
2.	प्रागैतिहासिक स्थल (सभ्यताएं) • पुरापाषाण से ताम्र पाषाण एवं कांस्य युग तक	20
3.	ऐतिहासिक राजस्थान • प्राचीन राजस्थान में समाज, धर्म एवं संस्कृति	30
4.	प्रमुख राजवंशों के महत्वपूर्ण शासकों की राजनीतिक एवं सांस्कृतिक उपलब्धियां • गुहिल • प्रतिहार • चौहान • परमार • राठौड़ • सिसोदिया • कच्छावा	37
5.	मध्यकालीन राजस्थान में प्रशासनिक तथा राजस्व व्यवस्था	94
6.	आधुनिक राजस्थान	109
7.	राजस्थान में राजनीतिक जागरण • समाचार पत्रों एवं राजनीतिक संस्थाओं की भूमिका	125
8.	राजस्थान में किसान एवं जनजाति आंदोलन	131
9.	विभिन्न देशी रियासतों में प्रजामण्डल आंदोलन	140
10.	राजस्थान का एकीकरण	152

कला एवं संस्कृति		
1.	राजस्थान की वास्तु परम्परा • मंदिर • किले • महल	157
2.	चित्रकला की विभिन्न शैलियाँ और हस्तशिल्प	192
3.	प्रदर्शन कला • शास्त्रीय संगीत • शास्त्रीय नृत्य, • लोक संगीत एवं वाद्ययन्त्र • लोक नृत्य एवं नाट्य	212
4.	भाषा एवं साहित्य	245
5.	धार्मिक जीवन • धार्मिक समुदाय • राजस्थान में संत संप्रदाय	257
6.	राजस्थान के लोक देवी - देवता	266
7.	राजस्थान में सामाजिक जीवन - मेले एवं त्यौहार	276
8.	सामाजिक रीति रिवाज, परम्पराएँ	287
9.	वेशभूषा एवं आभूषण	292
10.	राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व	295

5. निम्न में से कौनसा शिलालेख राजस्थान का प्राचीनतम शिलालेख कहलाता है?
(a) नगरी का शिलालेख
(b) सामोली का शिलालेख
(c) किराडू का शिलालेख
(b) बरली का शिलालेख **(d)**

6. सांडेराव का लेख कंहा से यह शिलालेख प्राप्त हुआ।
(a) भीलवाड़ा (b) पाली
(c) चित्तौड़गढ़ (d) जोधपुर **(b)**

7. राजस्थान के कौन से ताम्रपत्र से रानी कर्मवती द्वारा जौहर के प्रमाण मिलते हैं –
(a) आहड ताम्रपत्र (b) खेरोदा ताम्रपत्र
(c) पुर ताम्रपत्र (d)चीकली ताम्रपत्र **(c)**

8. आहड़ के ताम्रपत्र (1206) से हमें जानकारी मिलती है –
(a) महाराणा कुम्भा ने कीर्तिस्तम्भ का निर्माण करवाया था।
(b) महाराणा राजसिंह ने राजसमंद झील का निर्माण करवाया था ।
(c) गुजरात के शासक भीमदेव के समय में मेवाड़ पर गुजरात का अधिकार था ।
(d) किसानों से वसूल की जाने वाली विविध लाग - बागों का पता चलता है। **(c)**

9. मुण्डीयार की ख्यात मे किसका वर्णन है?
(a) आमेर के कछवाह शासको का वर्णन है
(b) मारवाड के राठौड शसको का वर्णन है
(c) कोटा के हाडा शासको का वर्णन है
(d) मेवाड के सिसोदिया शासको का वर्णन है। **(b)**

10. किस शिलालेख मे चौहानो को वत्स गौत्र का ब्राह्मण कहा गया है ?
(a) आमेर का शिलालेख
(b) श्रृंगी ऋषि का शिलालेख
(c) बिजौलिया का शिलालेख
(d) चीरवे का शिलालेख **(c)**

अध्याय – 2

प्रागैतिहासिक स्थल (सभ्यताएं)

- **पाषाणकालीन सभ्यता**

1. बागौर (भीलवाड़ा)

प्रिय छात्रों किसी भी सभ्यता का विकास किसी नदी के किनारे होता है क्योंकि जल ही जीवन है जल की आवश्यकता खेती के लिए और अन्य उपयोगों के लिए की पड़ती है।

- इसी प्रकार भीलवाड़ा जिले की माण्डल तहसील में कोठारी नदी के तट पर स्थित इस पुरातात्विक स्थल का उत्खनन 1967-68 से 1969-70 की अवधि में राजस्थान राज्य पुरातत्व विभाग एवं दक्कन कॉलेज, पुणे के तत्त्वावधान में श्री वी.एन. मिश्र एवं डॉ. एल.एस. लेशनि के नेतृत्व में हुआ है
- यहाँ से मध्य पाषाणकालीन (Mesolithic) लघु पाषाण उपकरण व वस्तुएँ (Microliths) प्राप्त हुई हैं।
- बागौर के उत्खनन में प्राप्त प्रस्तर उपकरण काल विभाजन के क्रम से तीन चरणों में विभाजित किये गये हैं। प्रथम चरण 3000 वर्ष ईसा पूर्व से लेकर 2000 वर्ष ईसा पूर्व तक, द्वितीय चरण 2000 वर्ष ईसा पूर्व से 500 वर्ष ईसा पूर्व का एवं तृतीय चरण 500 वर्ष ईसा पूर्व से लेकर प्रथम ईस्वी सदी तक की मानव सभ्यता की कहानी कहता है ।
- इन पाषाण उपकरणों को **स्फटिक** (Quartz) एवं चर्ट पत्थरों से बनाया जाता था। इनमें मुख्यतः पृथुक (Flake), फलक (Blade) एवं अपखण्ड (Chip) बनाये जाते थे। ये उपकरण आकार में बहुत छोटे (लघु अश्म उपकरण-Microliths) थे।
- बागौर में उत्खनन में पाषाण उपकरणों के साथ-साथ एक मानव कंकाल भी प्राप्त हुआ है।
- यहाँ पाये गये लघु पाषणा उपकरणों में ब्लेड, छिद्रक, स्क्रेपर, बेधक एवं चांद्रिक आदि प्रमुख हैं।
- ये पाषाण उपकरण चर्ट, जैस्पर, चाल्डेसनी, एगेट, क्वार्टजाइट, फ्लिंट जैसे कीमती पत्थरों से बनाये जाते थे। ये आकार में बहुत छोटे आधे से पौने इंच के औजार थे ये छोटे उपकरण संभवतः किसी लकड़ी या हड्डी के बड़े टुकड़ों पर आगे लगा दिये जाते थे।
- इन्हें मछली पकड़ने, जंगली जानवरों का शिकार करने, छीलने, छेद करने आदि कार्यों में प्रयुक्त किया जाता था। इन उपकरणों से यहाँ के लोगों का मुख्य व्यवसाय आखेट करना एवं कंद-मूल फल एकत्रित करने की स्थिति पर प्रकाश पड़ता है।
- यहाँ के प्रारंभिक स्तरों पर घर या फर्श के अवशेष नहीं मिलना साबित करता है कि यहाँ का मानव घुमक्कड़ जीवन जीता होगा।
- बागौर में द्वितीय चरण के उत्खनन में केवल 5 ताम्र उपकरण मिले हैं, जिसमें एक सूई (10.5 सेमी लम्बी), एक कुन्ताग्र

(Spearhead), एक त्रिभुजाकार शस्त्र, जिसमें दो छेद हैं, प्रमुख हैं ।

- इस चरण के उत्खनन में मकानों के अवशेष भी मिले हैं जिससे पुष्टि होती है कि इस समय मनुष्य ने एक स्थान पर स्थायी जीवन जीना प्रारम्भ कर दिया था।
- इस काल की प्राप्त हड्डियों में गाय, बैल, मृग, चीतल, बारहसिंघा, सूअर, गीदड़, कछुआ आदि के अवशेष मिले हैं।
- कुछ जली हुई हड्डियाँ व मांस के भुने जाने के प्रमाण मिलने से अनुमान है कि इस काल का मानव मांसाहारी भी था तथा कृषि करना सीख चुका था।
- उत्खनन के तृतीय चरण में हड्डियों के अवशेष बहुत कम होना स्पष्ट करता है कि इस काल (500 ई. पूर्व से ईसा की प्रथम सदी) में मानव संस्कृति में कृषि की प्रधानता हो गई थी ।
- **बागौर उत्खनन** में कुल **5 कंकाल** प्राप्त हुए हैं, जिनसे स्पष्ट होता है कि शव को दक्षिण पूर्व-उत्तर पश्चिम में लिटाया जाता था तथा उसकी टांगे मोड़ दी जाती थी।
- सभ्यता के तृतीय चरण में शव को उत्तर-दक्षिण में लिटाने एवं टांगे सीधी रखने के प्रमाण मिले हैं।
- शव को मोती के हार, ताँबे की लटकन, मृद्‌भाण्ड, मांस आदि सहित दफनाया जाता था। खाद्य पदार्थ व पानी हाथ के पास रखे जाते थे तथा अन्य वस्तुएँ आगे-पीछे रखी जाती थी।
- तृतीय चरण के एक कंकाल पर ईंटों की दीवार भी मिली है, जो समाधि बनाने की द्योतक है। मिट्टी के बर्तन यहाँ के द्वितीय चरण एवं तृतीय चरण के उत्खनन में मिले हैं।
- द्वितीय चरण के मृद्‌भाण्ड मटमैले रंग के, कुछ मोटे व जल्दी टूटने वाले थे। इनमें शरावतनें, तश्तरियाँ, कटोरे, लोटे, थालियाँ, तंग मुँह के घड़े व बोतलें आदि मिली हैं। (ये मृद्‌भाण्ड रेखा वाले तो थे परन्तु इन पर अलंकरणों का अभाव था।
- ऊपर से लाल रंग लगा हुआ है। ये सभी हाथ से बने हुए हैं) (तृतीय चरण के मृद्‌भाण्ड पतले एवं टिकाऊ हैं तथा चाक से बने हुए हैं। इन पर रेखाओं के अवशेष मिले हैं, परन्तु अलंकरण बहुत कम मिले हैं।
- (आभूषण: बागौर सभ्यता में मोतियों के आभूषण तीनों स्तरों के उत्खनन में प्राप्त हुए हैं। हार तथा कान की लटकनों में मोती बहुतायत से प्रयुक्त किये जाते थे।
- ये मोती एगेट, इन्द्रगोप व काँच के बने होते थे। मकान : बागौर में मकानों के अवशेष द्वितीय एवं तृतीय चरण में प्राप्त हुए हैं। हार तथा कान की लटकनों में मोती बहुतायत से प्रयुक्त किये जाते थे। ये मोती एगेट, इन्द्रगोप व काँच के बने होते थे।)
- ***मकान : बागौर में मकानों के अवशेष द्वितीय एवं तृतीय चरण*** में प्राप्त हुए हैं। मकान पत्थर के बने हैं। फर्श में भी पत्थरों को समतल कर जमाया जाता था।
- बागौर में मध्यपाषाणकालीन पुरावशेषों के अलावा लौह युग के उपकरण भी प्राप्त हुए हैं। इस सभ्यता के प्रारंभिक निवासी आखेट कर अपना जीवन यापन करते थे। परवर्ती काल में वे पशुपालन करना सीख गये थे। बाद में उन्होंने कृषि कार्य भी सीख लिया था।

कांस्ययुगीन सभ्यताएं -

2. कालीबंगा की सभ्यता -

कालीबंगा की सभ्यता एक नदी के किनारे बसी हुई थी। नदी का नाम है - **सरस्वती नदी** । इसे **द्रृषनदी, मृतनदी, नटनदी** के नाम से भी जानते हैं।
यह सभ्यता हनुमानगढ़ जिले में विकसित हुई थी हनुमानगढ़ जिले में एक अन्य सभ्यता जिसे **पीलीबंगा** की सभ्यता कहते हैं विकसित हुई।

इस सभ्यता की खोज -

- इस सभ्यता की सबसे पहले जानकारी देने वाले एक पुरातत्ववेत्ता एवं भाषा शास्त्री एल.पी. टेस्सिटोरीथे। इन्होंने ही इस सभ्यता के बारे में सबसे पहले परिचय दिया लेकिन इस सभ्यता की तरफ किसी का पूर्णरूप से ध्यान नहीं था इसलिए इसकी खोज नहीं हो पाई।
- इस सभ्यता के खोजकर्ता **अमलानंद घोष** है। इन्होंने 1952 में सबसे पहले इस सभ्यता की खोज की थी।
- इनके बाद में इस सभ्यता की खोज दो अन्य व्यक्तियों के द्वारा भी की गई थी जो 1961 से 1969 तक चली थी।

1. **बृजवासीलाल (बी.बी. लाल)**
2. **बीके (बालकृष्ण) थापर**

इन्हीं दोनों ने इस सभ्यता की विस्तृत रूप से खोज की थी

एल.पी. टेस्सिटोरी के बारे में -

- ये इटली के के निवासी थे । इनका जन्म सन् 1887 में हुआ। और यह अप्रैल 1914 ईस्वी में भारत मुंबई आए। जुलाई 1914 में यह जयपुर (राजस्थान) आये । बीकानेर राज्य इनकी कर्म स्थली रहा है ।
- उस समय के तत्कालीन राजा महाराजागंगा सिंह जी ने इन्हें अपने राज्य के सभी प्रकार के चारण साहित्य लिखने की जिम्मेदारी दी ।
- बीकानेर संग्रहालय भी इन्होंने ही बनवाया है ये एक भाषा शास्त्री एवं पुरातत्ववेत्ता थे उन्होंने राजस्थानी भाषा के दो प्रकार बताए थे।

  1. पूर्वी राजस्थानी 2. पश्चिमी राजस्थानी

- इस सभ्यता का कालक्रम **कार्बन डेटिंग पद्धति** के अनुसार 2350 ईसा पूर्व से 1750 ईसा पूर्व माना जाता है।
- कालीबंगा शब्द "सिंधीभाषा" का एक शब्द है जिसका शाब्दिक अर्थ होता है - **"काले रंग की चूड़िया"**। इस स्थल से काले रंग की चूड़ियों के बहुत सारी ढेर प्राप्त हुए इसलिए इस सभ्यता को कालीबंगा सभ्यता नाम दिया गया।
- कालीबंगा की सभ्यता भारत की ऐसी पहली सभ्यता स्थल है जो **स्वतंत्रता के बाद खोजी** गई थी। यह एक **कांस्य युगीन सभ्यता** है।

- हनुमानगढ़ जिले से इस सभ्यता से संबंधित जो भी वस्तुएं प्राप्त हुई है उनको सुरक्षित रखने के लिए राजस्थान सरकार के द्वारा **1985-86 में कालीबंगा संग्रहालय** की स्थापना की गई थी । यह संग्रहालय **हनुमानगढ़** जिले में स्थित है।

इस सभ्यता की विशेषताएँ –

- इस सभ्यता की सड़कें एक दूसरे को **समकोण** पर काटती थी । इसलिए यहाँ पर मकान बनाने की पद्धति को **"ऑक्सफोर्ड पद्धति"** कहते हैं। इसी पद्धति को '**जाल पद्धति, ग्रीक, चेम्सफोर्ड पद्धति**' के नाम से भी जानते हैं।
- मकान कच्ची एवं पक्की ईंट के बने हुए थे, आरम्भ में ये कच्ची ईंटें थीं इसलिए इस सभ्यता को दीन हीन सभ्यता भी कहते है। इन ईंटों का आकार 30×15×7.5 है ।
- इन मकानों की खिड़की एवं दरवाजे पीछे की ओर होते थे।
- यहाँ पर जो नालियां बनी हुई थी वह लकड़ी (काष्ठ) की बनी होती थी। आगे चलकर इन्हीं नालियों का निर्माण पक्की ईंटों से होता था ।
  (विश्व में एकमात्र ऐसा स्थान जहां लकड़ियों की बनी नालियाँ मिली है वह कालीबंगा स्थल है) **(परीक्षा की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण)**
- विश्व की प्राचीनतम **जुते हुए खेत** के प्रमाण इसी सभ्यता से मिले हैं।
- यहाँ पर मिले हुए मकानों के अंदर की दीवारों में दरारें मिलती हैं इसलिए माना जाता है कि विश्व में प्राचीनतम भूकंप के प्रमाण यहीं से प्राप्त होते हैं।
- यहाँ के लोग एक साथ में **दो फसलें** करते थे अर्थात् फसलों के होने के प्रमाण भी यहीं से मिलते हैं **जौं और गेहूं।**
- यहाँ पर उत्खनन के दौरान **यज्ञकुंड / अग्नि वेदिकाएं** प्राप्त हुए हैं यहाँ के लोग **बलिप्रथा** में भी विश्वास रखते थे।
- इस सभ्यता का पालतू जीव **कुत्ता** था। इस सभ्यता के लोग **ऊँट** से भी परिचित थे इसके अलावा **गाय, भैंस, बकरी, घोड़ा से** भी परिचित थे ।
- विश्व में प्राचीनतम् नगर के प्रमाण यहीं पर मिले हैं इसलिए इसे **नगरीय सभ्यता** भी कहते हैं यहाँ पर मूर्तिपूजा, देवी / देवता के पूजन, चित्रांकन या मूर्ति का कोई प्रमाण नहीं मिला है।
- यहाँ पर समाधि प्रथा का प्रचलन था । यहाँ पर **समाधि तीन प्रकार** की मिलती है अर्थात् तीन प्रकार से मृतक का अंतिम संस्कार किया जाता था
- अंडाकार गड्ढा खोदकर व्यक्ति को दफनाना । इस गड्ढे में व्यक्ति का सिर उत्तर की ओर पैर दक्षिण की ओर होते थे।
- अंडाकार गड्ढा खोदकर व्यक्ति को तोड़ मरोड़ कर इकट्ठा करके दफनाना ।
- एक गड्ढा खोदकर व्यक्ति के साथ आभूषण को दफनाना।
- **स्वास्तिक चिह्न** का प्रमाण इसी कालीबंगा सभ्यता से प्राप्त होता है इस स्वास्तिक चिह्न का प्रयोग यहाँ के लोग वास्तुदोष को दूर करने के लिए करते थे ।
- कालीबंगा की सभ्यता और मेसोपोटामिया की सभ्यता की **समानता** के प्रमाण **बेलनाकार बर्तन** में मिलते हैं।
- यहाँ पर एक **कपाल** मिला है **जिसमें छः प्रकार के छेद** थे। जिससे अनुमान लगाया जाता है कि यहाँ के लोग **शल्य चिकित्सा** से परिचित थे अर्थात् शल्य चिकित्सा के प्राचीनतम प्रमाण इसी सभ्यता से मिले हैं ।
- यहाँ पर एक सिक्का प्राप्त हुआ है जिसके एक ओर स्त्री का चित्र है तथा दूसरी ओर **चीता** का चित्र बना हुआ है अर्थात् अनुमान लगाया जा सकता है कि यहाँ पर परिवार की **मातृसत्तात्मक प्रणाली** का प्रचलन था।
- कालीबंगा सभ्यता को सिंधु सभ्यता की **तीसरी राजधानी** कहा जाता है।
- कालीबंगा सभ्यता में पुरोहित का प्रमुख स्थान होता था।
- इस सभ्यता के लोग मध्य एशिया से व्यापार करते थे, इसका प्रमाण **सामूहिक तंदूर** से मिलता है क्योंकि तंदूर मध्य-एशिया से संबंधित है।
- इस सभ्यता के भवनों का **फर्श सजावट** एवं अलंकृत के रूप में मिलता है।

काली बंगा वासियों का सामाजिक जीवन

- उत्खनन से अनुमान लगाया जाता है कि कालीबंगा के समाज में धर्मगुरु (पुरोहित), चिकित्सक, कृषक, कुंभकार, बढ़ई, सुनार, दस्तकार, जुलाहे, ईंट एवं मनके निर्माता, मुद्रा (मोहरें) निर्माता, व्यापारी आदि धन्धों के लोग निवास करते थे।
- कालीबंगा वासियों के नागरिक जीवन में त्यौहार एवं धार्मिक उत्सवों का पर्याप्त महत्त्व था। इसके साथ ही खिलौने, पासे, मत्स्य काँटे आदि के अवशेषों से अनुमान है कि इनके जीवन में मनोरंजन का पर्याप्त महत्व था। संभवतः ये **शाकाहारी एवं मांसाहारी** दोनों होते थे। खाद्य सामग्रियों में फल, फूल, दूध, दही, जौं, गेहूँ, मांस आदि का प्रयोग होता था।

मृतक संस्कार :

कालीबंगा के निवासियों की **तीन प्रकार** की **समाधियाँ (कब्रें)** मिली हैं ।

- शवों को अण्डाकार गड्ढे में उत्तर की ओर सिर रखकर मृत्यु संबंधी उपकरणों के साथ गाड़ते थे।
- दूसरे प्रकार की समाधियों में **शव की टाँगे समेटकर** गाड़ा जाता था।
- तीसरे प्रकार में शव के साथ बर्तन और एक-एक सोने व मणि के दाने की माला से विभूषित कर गाड़ा जाता था।
- उत्खनन में जो शवाधान प्राप्त हुए हैं उनसे यह स्पष्ट हो जाता है कि वे मृत्युपरांत किसी न किसी प्रकार का विश्वास अवश्य रखते थे, क्योंकि मृतकों के साथ खाद्य सामग्री, आभूषण, मनके, दर्पण तथा विभिन्न प्रकार के मद्भाण्ड आदि रखे जाते थे।
- यहाँ मोहनजोदड़ो की भाँति लिंग, मातृशक्ति आदि की **मूर्तियाँ** नहीं मिली है, जिससे यहाँ के निवासियों की धार्मिक भावना का पता नहीं चल पाया है। यहाँ की **लिपि दाँये से**

प्रश्न-आहड़ सभ्यता के बारे में निम्न कथनों पर विचार कीजिए – [RAS. 2021]
(A) आहड़वासी तांबा गलाना जानते थे।
(B) ये लोग चावल से परिचित नहीं थे।
(C) धातु का काम आहड़वासियों की अर्थव्यवस्था का एक साधन था।
(D) यहाँ से काले - लाल रंग मृद्भाण्ड मिले हैं, जिन पर सामान्यतः सफेद रंग से ज्यामितीय आकृतियाँ उकेरी गई हैं।
सही विकल्प का चयन कीजिए –
(1) A, B एवं C सही हैं
(2) A, C एवं D सही हैं
(3) A एवं B सही हैं
(4) C एवं D सही हैं (2)

4. बैराठ (कोटपूतली-बहरोड़) :

- बैराठ कोटपूतली-बहरोड़ जिले में शाहपुरा उपखण्ड में बाण गंगा नदी के किनारे स्थित लौह युगीन स्थल है।
- बैराठ का प्राचीन नाम **"विराट नगर"** था। महाजनपद काल में यह **मत्स्य जनपद** की **राजधानी** था।
- यहाँ पर उत्खनन कार्य वर्ष **1936-37** में **दयाराम साहनी** द्वारा तथा **1962-63** में नीलरत्न बनर्जी तथा कैलाश नाथ दीक्षित द्वारा किया गया।
- वर्ष 1837 में कैप्टन बर्ट ने यहाँ से मौर्य सम्राट अशोक के भाब्रू शिलालेख की खोज की । वर्तमान में यह शिलालेख **कलकत्ता संग्रहालय** में सुरक्षित है।
- **भाब्रू शिलालेख** में सम्राट अशोक को मगध का राजा 'नाम से संबोधित किया गया है।
- भाब्रू शिलालेख के नीचे **बुद्ध, धम्म एवं संघ** लिखा हुआ है।
- बैराठ में **बीजक की पहाड़ी, भीम जी की डूंगरी** तथा **महादेव जी की डूंगरी** से उत्खनन कार्य किया गया ।
- यहाँ से मौर्य कालीन तथा इसके बाद के समय के अवशेष मिले हैं।
- यहाँ से **36 मुद्राएँ** प्राप्त हुई है, जिनमें 8 **पंचमार्क चाँदी** की तथा **28 इण्डो-ग्रीक** तथा यूनानी शासकों की है । **16 मुद्राएँ यूनानी शासक मिनेण्डर** की है।
- उत्तर भारतीय चमकीले मृद्भाण्ड वाली संस्कृति का प्रतिनिधित्व करने वाले राजस्थान में सबसे महत्वपूर्ण प्राचीन स्थल **बैराठ** में है।
- वर्ष 1999 में बीजक की पहाड़ी से अशोक कालीन गोल बौद्ध मंदिर, स्तूप एवं बौद्ध मठ के अवशेष मिले हैं जो **हीनयान सम्प्रदाय** से संबंधित है ।
- बैराठ सभ्यता के लोगों का जीवन पूर्णतः ग्रामीण संस्कृति का था।
- बैराठ में पाषाण कालीन **हथियारों** के निर्माण का **एक बड़ा कारखाना** स्थित था ।
- यहाँ भवन निर्माण के लिए मिट्टी की बनाई ईंटों का प्रयोग अधिक किया जाता था।
- यहाँ पर **शुंग एवं कुषाण कालीन** अवशेष प्राप्त हुए हैं।
- ये सभी एक मृद्भाण्ड में सूती कपड़े से बंधी मिली है।
- बैराठ सभ्यता के लोग **लौह धातु से परिचित** थे । यहाँ उत्खनन से लौहे के तीर तथा भाले प्राप्त हुए हैं ।
- माना जाता है कि **हूण शासक मिहिर** कुल ने बैराठ को नष्ट कर दिया ।
- **634 ई. में ह्वेनसांग विराट** नगर आया था तथा उसने यहाँ बौद्ध मठों की संख्या **8 बताई** है ।
- बैराठ से **'शंखलिपि'** के प्रमाण प्रचुर मात्रा में प्राप्त हुए हैं ।
- यहाँ से **मुग़ल काल में टकसाल** होने के प्रमाण मिलते हैं। यहाँ मुग़ल काल में ढाले गये सिक्कों पर **बैराठ अंकित'** मिलता है।
- यहाँ बनेड़ी, ब्रह्मकुण्ड तथा जीण गोर की पहाड़ियों से वृषभ, **हिरण तथा वनस्पति** का चित्रण प्राप्त होता है ।

5. गणेश्वर (नीमकाथाना):

- **नीमकाथाना जिले से** स्थान से कुछ दूरी पर स्थित गणेश्वर नामक स्थान से उत्खनन में **ताम्र युगीन** उपकरण प्राप्त हुए हैं। यह स्थान काँतली नदी के किनारे स्थित है।
- गणेश्वर को **पूर्व हड़प्पा कालीन सभ्यता** माना जाता है। **(परीक्षा की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण)**
- गणेश्वर सभ्यता 2800 ईसा पूर्व में विकसित हुई थी।
- गणेश्वर को **"पुरातत्व का पुष्कर"** भी कहा जाता है।
- भारत में पहली बार किसी स्थान से इतनी मात्रा में ताम्र उपकरण प्राप्त हुए हैं ।
- गणेश्वर से **ताँबे का बाण** एवं **मछली पकड़ने का कांटा** प्राप्त हुआ है ।
- इन उपकरणों में तीर, भाले, सूइयां, कुल्हाड़ी, मछली पकड़ने के कांटे आदि शामिल है ।
- गणेश्वर को भारत में **'ताम्र युगीन सभ्यताओं की 'जननी'** कहा जाता है ।
- यहाँ पर उत्खनन कार्य **रत्न चंद्र अग्रवाल** द्वारा 1977 में तथा विस्तृत उत्खनन 1978-79 में **विजय कुमार द्वारा** करवाया गया ।
- गणेश्वर से उत्खनन में जो मृद्भाण्ड प्राप्त हुए है उन्हें **कपिषवर्णी मृद्पात्र** कहते हैं।
- गणेश्वर से **मिट्टी के छल्लेदार बर्तन** भी प्राप्त हुए हैं ।
- गणेश्वर से **काले एवं नीले रंग** से अलंकृत मृद्पात्र मिले हैं।
- गणेश्वर में बस्ती को बाढ़ से बचाने हेतु वृहदाकार पत्थर के बाँध बनाने के प्रमाण मिले हैं ।
- गणेश्वर में **ईंटों** के उपयाग के **प्रमाण नहीं** मिले हैं ।
- मिट्टी के छल्लेदार बर्तन केवल गणेश्वर में ही प्राप्त हुए हैं।
- गणेश्वर सभ्यता के उत्खनन से **दोहरी पेचदार शिरेवाली ताम्र पिन** भी प्राप्त हुई है ।
- गणेश्वर सभ्यता के लोग गाय, बैल, बकरी, सुअर, कुत्ता, गधा आदि पालते थे ।

गणेश्वर सभ्यता को **'ताम्र संचयी संस्कृति'** भी कहा जाता है ।

6. **गिलूण्ड (राजसमंद) :**
- यह ताम्र युगीन सभ्यता **राजसमंद जिले में बनास नदी के तट** पर स्थित है।
- **मोडियामगरी'** नामक टीले का संबंध गिलूण्ड सभ्यता से है।
- **वर्ष 1957-58 में बी. बी. लाल द्वारा** यहाँ पर **उत्खनन कार्य** करवाया गया।
- यहाँ पर **पक्की ईंटों के** प्रयोग के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।
- यहाँ पर उत्खनन से **ताम्र युगीन सभ्यता** एवं बाद की सभ्यताओं के अवशेष मिले हैं।
- यहाँ पर आहड़ सभ्यता का प्रसार था तथा इसी के समय यहाँ मृद्भाण्ड, मिट्टी की पशु आकृतियां आदि के चित्र मिले हैं।
- गिलूण्ड के मृद्भाण्डों पर **ज्यामितीय चित्रांकन** के अलावा **प्राकृतिक चित्रांकन** भी किया गया है।
- गिलूण्ड में उच्च स्तरीय जमाव में क्रीम रंग एवं काले रंग से चित्रित पात्रों पर चिकतेदार हिरण प्रकाश में आए हैं।
- गिलूण्ड में लाल एवं काले रंग के **मृद्भाण्ड** मिले हैं।

7. **रंगमहल (हनुमानगढ़) :**
- रंगमहल हनुमानगढ़ जिले में सरस्वती (वर्तमान में घग्घर) नदी के पास स्थित है ।
- यह **एक ताम्र युगीन सभ्यता** है ।
- यहाँ पर उत्खनन कार्य **डॉ. हन्नारिड** के निर्देशन में **स्वीडिश दल द्वारा 1952-54 ई.** में किया गया ।
- ये मृद्भाण्ड चाक से बने होते थे तथा ये पतले तथा चिकने होते थे ।
- यहाँ से कुषाण कालीन तथा उससे पहले की **105 ताँबे की मुद्राएँ** प्राप्त हुई है जिनमें कुछ **पंचमार्क मुद्राएँ** भी हैं ।
- यहाँ से **ब्राह्मी लिपि** में नाम अंकित **दो कांसे** की सीलें भी प्राप्त हुई हैं ।
- यहाँ से उत्खनन में **डॉ. हन्नारिड** को प्राप्त मिट्टी का **कटोरा स्वीडन के लूण्ड** संग्रहालय में सुरक्षित है ।
- यहाँ के निवासी मुख्य रूप से **चावल की खेती** करते थे।
- यहाँ के मकानों का निर्माण **ईंटों से** होता था ।
- यहाँ से प्राप्त **मृद्भाण्ड मुख्यत : लाल या गुलाबी रंग** के थे ।
- यहाँ से गांधार शैली की मृण मूर्तियाँ, टोंटीदार घड़े, घण्टाकार मृद्पात्र एवं **कनिष्क कालीन मुद्राएँ** प्राप्त हुई हैं ।
- रंग महल से ही गुरु-शिष्य की मिट्टी की मूर्ति प्राप्त हुई है ।
- इसे **कुषाण कालीन सभ्यता** के समान माना जाता है। **(परीक्षा के दृष्टि से महत्त्वपूर्ण)**
- रंगमहल में बसने वाली बस्तियों के तीन बार बसने एवं उजड़ने के प्रमाण मिले हैं ।

8. **ओझियाना (ब्यावर) :**
- **ब्यावर के बदनोर** के पास **खारी नदी** के तट पर स्थित यह स्थल ताम्र युगीन **आहड़ संस्कृति** से संबंधित है ।
- इस स्थल का उत्खनन **बी. आर. मीणा** तथा **आलोक त्रिपाणी** द्वारा वर्ष 1999-2000 में किया गया ।
- यह पुरातात्विक स्थल पहाड़ी पर स्थित था जबकि **आहड़ संस्कृति** से जुड़े अन्य स्थल नदी घाटियों में पनपे थे ।
- यहाँ से वृषभ तथा गाय की मृण्मय मूतियां प्राप्त हुई है जिन पर **सफेद रंग** से चित्रण किया हुआ है ।

9. **नगरी (चित्तौड़गढ) :**
- नगरी नामक पुरातात्विक स्थल चित्तौड़गढ़ में बेड़च नदी के तट पर स्थित है, जिसका **प्राचीन नाम माध्यमिका** मिलता है ।
- यहाँ पर सर्वप्रथम **उत्खनन कार्य** वर्ष 1904 में **डॉ. डी. आर. भण्डारकर** द्वारा तथा तत्पश्चात् 1962-63 में केन्द्रीय पुरातत्व विभाग द्वारा करवाया गया ।
- यहाँ से **शिवि जनपद** के सिक्के तथा **गुप्त कालीन कला के अवशेष** प्राप्त हुए हैं ।
- प्राचीन नाम 'माध्यमिका' **पतंजलि के महाभाष्य** में मिलता है ।
- यहाँ से ही घोसूण्डी अभिलेख (द्वितीय शताब्दी ईसा पूर्व) प्राप्त हुआ है ।
- नगरी **शिवि जनपद की राजधानी** रही है ।
- यहाँ पर 'कुषाण कालीन स्तर' में नगर की सुरक्षा हेतु निर्मित मजबूत दीवार बनाये जाने के अवशेष प्राप्त हुए हैं ।
- नगरी की खोज **1872 ई. में कार्लाइल** द्वारा की गई ।
- यहाँ से चार **चक्राकार कुएँ** भी प्राप्त हुए हैं ।

10. **सुनारी (खेतड़ी, नीमकाथाना) :**
- **'सुनारी'** नामक पुरातात्विक स्थल नीमकाथाना की खेतड़ी तहसील में काँतली नदी के किनारे स्थित है ।
- यहाँ पर उत्खनन कार्य 1980-81 में राजस्थान राज्य पुरातत्व विभाग द्वारा करवाया गया ।
- यहाँ से **लौहा गलाने की प्राचीनतम भट्टियाँ प्राप्त** हुई हैं।
- यहाँ से **सलेटी रंग के मृद्भाण्ड** संस्कृति के अवशेष प्राप्त हुए हैं ।
- सुनारी से **मातृ देवी की मृण मूर्तियाँ** तथा धान संग्रहण का कोठा प्राप्त हुआ है ।
- सुनारी से मौर्य कालीन सभ्यता के अवशेष मिले हैं जिनमें **काली पॉलिश युक्त मृद** पात्र हैं।
- जोधपुरा, नोह तथा सुनारी से शुंग तथा कुषाण कालीन अवशेष भी प्राप्त हुए हैं ।
- सुनारी के निवासी भोजन में **चावल का प्रयोग** करते थे तथा **घोड़ों से रथ खींचते** थे ।
- सुनारी से लौहे के तीर, भाले के अग्रभाग, लौहे का कटोरा तथा कृष्ण परिमार्जित मृदपात्र भी मिले हैं ।

11. **जोधपुरा (कोटपूतली-बहरोड़) :**

जोधपुरा नामक **पुरातात्विक स्थल कोटपूतली-बहरोड़** जिले की **कोटपुतली तहसील में साबी नदी** के किनारे स्थित है ।
- यह एक **लौह युगीन प्राचीन सभ्यता** स्थल है ।

29. डडीकर (अलवर):

- इस स्थल से पाँच से सात हजार वर्ष पुराने शैल चित्र प्राप्त हुए हैं ।

30. सोंथी :

- यह बीकानेर में स्थित है ।
- खोज :- अमलानंद घोष द्वारा (1953 में) की गई।
- यह कालीबंगा प्रथम के नाम से प्रसिद्ध है।
- यहाँ पर हड़प्पा कालीन सभ्यता के अवशेष मिले हैं।

31. बांका :

- यह भीलवाड़ा जिले में स्थित है ।
- यहाँ से राजस्थान की प्रथम अलंकृत गुफा मिली है ।

32. गुराराा :

- सीकर जिले में स्थित है ।
- यहाँ से हमें **चाँदी के 2744 पंचमार्क सिक्के** मिले हैं ।

33. बयाना :

- यह भरतपुर में स्थित है ।
- इसका प्राचीन नाम श्रीपंथ है ।
- यहाँ से गुप्तकालीन सिक्के एवं नील की खेती के साक्ष्य मिले हैं ।

क्र.स.	संस्कृति काल	स्थल
1.	पुरा पाषाण काल	डीडवाना एवं जायल (नागौर), भानगढ़ (अलवर), विराटनगर (कोटपूतली-बहरोड़), दर (भरतपुर), **इन्द्रगढ़ (कोटा)**
2.	मध्य पाषाण काल	**बागौर (भीलवाड़ा),** विराटनगर (कोटपूतली-बहरोड़), तिलवाड़ा (बाड़मेर)
3.	नव पाषाण काल	आहड़ (उदयपुर), कालीबंगा (हनुमानगढ़), **गिलूण्ड** (राजसमंद), झर (जयपुर)
4.	ताम्र पाषाण काल	बागौर (भीलवाड़ा), तिलवाड़ा (बालोतरा), **बालाथल (उदयपुर)**
5.	ताम्रयुगीन	**गणेश्वर (नीमकाथाना),** साबणियां, पूंगल (बीकानेर), बूढ़ापुष्कर (अजमेर), **बेणेश्वर (डूंगरपुर),** नन्दलालपुरा, किराड़ोत, चीथबाड़ी (कोटपूतली-बहरोड़), कुराड़ा (परबतसर तहसील, डीडवाना-कुचामन), पलाना (जालौर), मलाह (भरतपुर), कोलमाहौली (सवाईमाधोपुर)
6.	लौह युगीन	**नोह (भरतपुर), सुनारी (खेतड़ी, नीमकाथाना),** विराटनगर, (कोटपूतली-बहरोड़), जोधपुरा, (कोटपूतली-बहरोड़), सांभर (जयपुर ग्रामीण), रैढ़, नगर, नैणवा, भीनमाल (जालौर), नगरी (चित्तौड़गढ़), चक-84, तरखानवाला (अनूपगढ़),ईसवाल (उदयपुर)

सारांश

- बागौर – भीलवाड़ा
- कालीबंगा – हनुमानगढ़
- खोजकर्ता - अमलानंद घोस
- आहड़ – (उदयपुर)- अक्षयकीर्ति व्यास
- बैराठ – (कोटपूतली-बहरोड़)- दयाराम साहनी 1936-37 में
- गणेश्वर (नीमकाथाना)- रत्नचंद्र अग्रवाल द्वारा उत्खनन, ताम्रयुगीन सभ्यता
- गिलुण्ड (राजसमंद)- बी .बी .लाल
- रंगहमल (हनुमानगढ़) – डॉ. ध्नारिड द्वारा उत्खनन
- ओझियाना (ब्यावर)- B.R. मीणा द्वारा उत्खनन
- नगरी (चित्तौड़) – डॉ. डी . आर . भण्डारकर
- सुनारी (खेतड़ी, नीमकाथाना)- लोहा गलाने की प्राचीन भट्टिया
- जोधपुर (कोटपूतली-बहरोड़)-R.C.अग्रवाल द्वारा उत्खनन
- तिलवाड़ा (बालोतरा)- V.N. मिश्र
- रैंढ (Tonk)- दयाराम साहनी
- नगर (जयपुर ग्रामीण) – कृष्ण देव
- भिनमाल (जालौर)- रतनचंद्र अग्रवाल
- नोह (भरतपुर)- रतनचंद्र अग्रवाल

लेखक	ग्रंथ
करणीदान	सूरज प्रकाश
दौलतविजय	खुमानरासो
पद्मनाभ	**कान्हड़दे प्रबंध**
जगजीवन भट्ट	अजितोदय
रीमा हूजा	ए हिस्ट्री ऑफ राजस्थान
पृथ्वीराज विजय	जयानक
वंशभास्कर	सूर्यमल मिश्रण

अभ्यास प्रश्न

1. **"ए सर्वे वर्क ऑफ एनशिएन्ट साइट्स अलोंग दी लोस्टं सरस्वती रिवर" किसका कार्य था?**
   (a) एम. आर. मुगल (b) ओरैल स्टैन
   (c) हरमन गोइट्ज (d) वी. एन. मिश्रा **(b)**

2. **प्राचीन सरस्वती नदी के किनारे बसी राजस्थान की सबसे प्राचीन सभ्यता कौनसी है?**
   (a) कालीबंगा (b) आहड़
   (c) गिलूण्ड (d) गणेश्वर **(a)**

3. निम्नांकित में से किस इतिहासवेत्ता ने कालीबंगा को सिंधु घांटी साम्राज्य की तृतीय राजधानी कहा है?
(a) जी. एच. ओझा (b) श्यामल दास
(c) दशरथ शर्मा (d) दयाराम साहनी **(c)**

4. राजस्थान की किस सभ्यता को ताम्रयुगीन सभ्यता की जननी कहते हैं?
(a) नागौर (b) गिलूण्ड
(c) आहड़ (d) गणेश्वर **(d)**

5. प्राचीन भारत के टाटानगर के नाम से विख्यात सभ्यता है?
(a) तिलवाड़ा (b) नलियासर
(c) जोधपुरा (d) रैढ़ **(d)**

6. मालव सिक्के व आहत मुद्राएँ किस सभ्यता के अवशेष हैं?
(a) जोधपुरा (b) नलियासर
(C) नगर (मालव नगर) (d) रैढ़ **(c)**

7. कान्तली नदी के किनारे स्थित गणेश्वर की सभ्यता का उत्खनन किसके नेतृत्व में हुआ?
(a) आर.सी. अग्रवाल व एच.एम. साँकलिया
(b) आर.सी. अग्रवाल व अमलानंद घोष
(c) आर.सी. अग्रवाल व अक्षय कीर्ति व्यास
(d) आर.सी. अग्रवाल व विजयकुमार **(B)**

8. इनमें से कौनसा स्थल लौहयुगीन सभ्यता से सम्बन्धित नहीं है?
(a) डेरा (b) जोधपुरा
(c) विराटनगर (d) आहड़ **(D)**

9. निम्न में से कौन कालीबंगा सभ्यता से सम्बन्धित नहीं है-
(a) अमलानंद घोष (b) बी.बी. लाल
(c) बी.के. थापर (d) आर.सी.अग्रवाल **(D)**

10. एक घर में एक साथ छः चूल्हे किस पुरातात्विक स्थल में प्राप्त हुए हैं?
(a) कालीबंगा (b) आहड़
(c) गिलूण्ड (d) बागोर **(b)**

अध्याय – 3

ऐतिहासिक राजस्थान

महत्वपूर्ण ऐतिहासिक केंद्र :-

अल्बर्ट हॉल म्यूजियम

जयपुर के रामनिवास बाग में स्थित।

निर्माण:- इसकी नींव महाराजा रामसिंह के शासनकाल में सन् **1876 में प्रिंस अल्बर्ट** ने रखी और उन्हीं के नाम पर इस संग्रहालय का नाम अल्बर्ट म्यूजियम रखा गया।

शुरुआत :- 1876 ई. में प्रिन्स एल्बर्ट द्वारा ।

लागत: 4 लाख रुपये।

डिजाइनकर्ता :- सर सैम्यूल स्विंटन जैकब

- भारतीय एवं फारसी (मुग़ल) शैली में निर्मित ।
- राजस्थान का **प्रथम एवं सबसे बड़ा संग्रहालय** ।
- इस संग्रहालय को सन् 1887 में सर एडवर्ड बेडफोर्ड द्वारा विधिवत उद्घाटन कर जनता के लिए खोल दिया गया।
- इस संग्रहालय में मिस्र की प्राचीन कालीन ममी रखी हुई है। यह ममी जयपुर में पैनोपोलिस (मिस्र) से लाई गई थी यह **'तूतू नामक'** महिला की ममी है, जो खेम नामक देव के उपासक पुरोहितों के परिवार की सदस्य थी।
- इस संग्रहालय में ईरान के शाह द्वारा मिर्जा राजा जयसिंह को भेंट किया गया दुनिया का **अप्रतिम बहुमूल्य गलीचा** रखा हुआ है।
- अल्बर्ट हॉल देश की एकमात्र ऐसी ईमारत है जिसमें कई देशों की स्थापत्य शैली देखने को मिलती है।
- इस संग्रहालय में सन् 1506 से 1922 तक के जयपुर के राजाओं के चित्र एवं राज्य चिह्न रखे हुए हैं। इस संग्रहालय में कई पुराने चित्र, दरियां, हाथीदाँत, कीमती पत्थर, धातु मूर्तियाँ एवं रंग-बिरंगी वस्तुएँ भी रखी हुई हैं ।
- वर्ष 2018 में राजस्थान के मुख्यमंत्री एवं उपमुख्यमंत्री का **शपथ समारोह अल्बर्ट हॉल** में आयोजित किया गया।

राजस्थान पुरातत्व एवं संग्रहालय विभाग

- **वर्ष 1950** में जयपुर में स्थापित।
- यह विभाग प्रदेश में बिखरी हुई पुरा सम्पदा, सांस्कृतिक धरोहर की खोज, सर्वेक्षण तथा प्रचार-प्रसार का कार्य करता है।
- इस विभाग द्वारा राजस्थान में 320 से ज्यादा स्मारक एवं पुरास्थल संरक्षित घोषित किए जा चुके हैं।
- यह विभाग द रिसर्चर' नामक पत्रिका का प्रकाशन भी करता है।

अरबी फारसी शोध संस्थान

- सन् 1978 में टोंक में स्थापित ।
- इस संस्थान में टोंक के नवाबों द्वारा संग्रहित हस्तलिखित ग्रंथों, दस्तावेजों, भाषा साहित्य तथा शासकीय रिकॉर्ड में पाए गए उर्दू, फारसी पुस्तकें एवं दस्तावेज संग्रहित हैं। ।

- इस भण्डार में राजस्थानी भाषा में रासो साहित्य एवं सचित्र पाण्डुलिपियाँ संग्रहित हैं।
- **रूपायन संस्थान** सन् 1960 में बोरुंदा (जोधपुर) में स्थापित।
- यह संस्थान पाण्डुलिपियों के संरक्षण के लिए प्रयासरत है ।
- विजयदान देथा एवं कोमल कोठारी का संबंध इसी संस्थान से है।

संस्थान का नाम	**स्थापना वर्ष**
राजस्थान राज्य पाठ्य पुस्तक मण्डल (जयपुर)	1 जनवरी, 1974
राजस्थान मदरसा बोर्ड (जयपुर)	जनवरी, 2003
राजस्थान संस्कृत अकादमी (जयपुर)	1980
जवाहर कला केन्द्र (जयपुर)	8 अप्रैल , 1993
राजस्थान प्राथमिक शिक्षा परिषद् (जयपुर)	3 नवम्बर, 1997
राजस्थान स्टेट ओपन स्कूल (जयपुर)	**21 मार्च, 2005**
बालिका शिक्षा फाउण्डेशन (जयपुर)	30 मार्च, 1995
जयपुर कत्थक केंद्र (जयपुर)	**1978-79**
राजस्थान ललित कला अकादमी (जयपुर)	24 नवम्बर, 1957
राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी (जयपुर)	**15 जुलाई, 1969**
राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी (जयपुर)	19 जनवरी, 1986
राजस्थान संगीत संस्थान (जयपुर)	1950
गुरु नानक संस्थान (जयपुर)	1969
राजस्थान उर्दू अकादमी (जयपुर)	1979
राजस्थान सिंधी अकादमी (जयपुर)	1979
रामचरण प्राच्य विद्यापीठ एवं संग्रहालय (जयपुर)	1960
राजस्थानी पंजाबी भाषा अकादमी (जयपुर)	2006
राज्य सहकारी संघ (जयपुर)	1957
पंडित झाबरमल्ल शोध संस्थान जयपुर	2000
राजस्थान संगीत नाटक अकादमी (जोधपुर)	1957
प्राविधिक शिक्षा निदेशालय (जोधपुर)	17 अगस्त, 1956
पश्चिमी क्षेत्र का सांस्कृतिक केंद्र (उदयपुर)	1986
भारतीय लोक कला मण्डल (उदयपुर)	1952

राजस्थान के प्रमुख शोध संस्थान –

संस्थान का नाम	**मुख्यालय**
राजकीय संग्रहालय	झालावाड़
श्री सरस्वती पुस्तकालय	फतेहपुर (सीकर)
पुस्तक प्रकाश पुस्तकालय	जोधपुर
पोथीखाना (महत्त्वपूर्ण)	जयपुर
सरस्वती भण्डार	उदयपुर
रूपायन संस्थान	जोधपुर
बिड़ला तकनीकी म्यूजियम	पिलानी (झुंझुनू)
राजस्थानी शोध संस्थान	चौपासनी (जोधपुर ग्रामीण)
राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी	जयपुर
राजस्थानी साहित्य अकादमी	उदयपुर
राजस्थान संस्कृत अकादमी	जयपुर
राजस्थान उर्दू अकादमी	जयपुर
राजस्थान सिंधी अकादमी	जयपुर
राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी	जयपुर
पंडित झाबरमल शोध संस्थान	जयपुर
राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी	बीकानेर
सरदार म्यूजियम	जोधपुर

प्रश्न- राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी कहाँ अवस्थित है? [RAS. 2021]
(1) बीकानेर (2) जोधपुर
(3) जयपुर (4) उदयपुर (1)

चौहान वंश का इतिहास

अजमेर के चौहान

वासुदेव चौहान (वासुदेव प्रथम)

शाकभरी का प्राचीन नाम सपादलक्ष था। सपादलक्ष का अर्थ सवा लाख गांवों का समूह। यहीं पर वासुदेव चौहान (वासुदेव प्रथम) ने चौहान वंश की नींव डाली। इसलिए इन्हें चौहानों का आदि पुरुष भी कहते हैं। वासुदेव प्रथम शाकम्भरी/सांभर को अपनी राजधानी बनाया। सांभर झील का निर्माण भी इसी शासक ने करवाया।

पृथ्वीराज प्रथम

चौहान वंश का प्रथम स्वतंत्र शासक पृथ्वीराज प्रथम था। पृथ्वीराज प्रथम ने गुजरात के भडौंच पर अधिकार कर वहां आशापूर्णा देवी के मंदिर का निर्माण करवाया।

अजयराज प्रथम

पृथ्वीराज के बाद अजयराज शासक बना। **अजयराज ने 1113 ई. में पहाडियों के मध्य अजमेरु (अजमेर) नगर की स्थापना की** और इसे नई राजधानी बनाया। अजयराज ने पहाडियों के मध्य अजमेर के दुर्ग का निर्माण करवाया। मेवाड़ के पृथ्वीराज सिसोदिया ने 15 वीं सदी में इसका नाम तारागढ़ दुर्ग कर दिया। इस दुर्ग को पूर्व का जिब्राल्टर कहा जाता है।

अर्णोराज (1133-1155 ई.)

अर्णोराज अजयराज का पुत्र था। अर्णोराज का शासनकाल 1133 -1155 ई. तक रहा।

1. **अर्णोराज ने 1137 ई. में आनासागर झील का निर्माण करवाया** ।
2. **आर्णोराज ने पुष्कर में वराह मंदिर का निर्माण अर्णोराज ने करवाया** ।
3. अर्णोराज को गुजरात के चालुक्य शासक कुमारपाल ने आबू के निकट युद्ध में पराजित किया था
4. अर्णोराज के पुत्र जगदेव ने अर्णोराज की हत्या कर दी इसलिए जगदेव को चौहानों में पितृहन्ता कहा जाता है।

विग्रहराज चतुर्थ (बीसलदेव) (1153-1164 ई.)

1. बीसलदेव का कार्यकाल चौहान वंश का स्वर्णकाल कहा जाता है।
2. **बीसलदेव को कविबांधव भी कहा जाता है।**
3. बीसलदेव ने हरिकेलि (नाटक) की रचना की। जिसमें शिव-पार्वती व कुमार कार्तिकेय का वर्णन है।
4. बीसलदेव दरबारी कवि **नरपति नाल्ह ने बीसलदेव रासो ग्रन्थ की रचना की।**
5. बीसलदेव कवि **सोमदेव ने ललित विग्रहराज की रचना की।**
6. विग्रहराज चतुर्थ ने बीसलसागर तालाब (वर्तमान बीसलपुर बाँध के स्थान पर) का निर्माण करवाया था।
7. 1153 से 1156 ई. के मध्य विग्रहराज (बीसलदेव) ने अजमेर में एक संस्कृत विद्यालय का निर्माण करवाया जिसे **1200 ई. में कुतुबुद्दीन ऐबक ने संस्कृत विद्यालय को तुडवाकर अढ़ाई दिन का झोपडाऽ बनवाया।**
8. विग्रहराज के बारे में किल होर्न ने लिखा है कि **"वह उन हिन्दू शासको में से एक था जो कालीदास व भवभूति से होड़ कर सकता था"।**

पृथ्वीराज तृतीय (पृथ्वीराज चौहान)

1177 ई. में पृथ्वीराज चौहान ने 11 वर्ष की अवस्था में राज गद्दी संभाली। उनके पिता का नाम सोमेश्वर तथा माता का नाम कर्पूरी देवी था।

रायपिथौरा – पृथ्वी राज तृतीय चौहान को यह उपाधि प्रदान की गई है।

- पृथ्वीराज चौहान तृतीय का **पुत्र गोविंदराज चौहान** था।
- पृथ्वीराज चौहान तृतीय का **प्रधानमंत्री - कैमास (कदंबदास)**
- **पृथ्वीराज चौहान तृतीय की उपाधियाँ** - राय पिथौरा, दल पंगुल (विश्व विजेता) आदि।
- **पृथ्वीराज चौहान तृतीय के दरबारी कवि** - चंदरबरदाई, वागीश्वर, विद्यापति गौड़, जयानक, जनार्दन, आशाधर आदि।
- पृथ्वीराज चौहान तृतीय अजमेर के चौहान वंश का अंतिम प्रतापी शासक था, जिसने दिल्ली और अजमेर राजधानीयों से शासन किया।
- पृथ्वीराज चौहान तृतीय मात्र 11 वर्ष की अल्पायु में शासक बने थे, इसलिए शासन की बागडोर इसकी माँ कर्पूरी देवी ने संभाली।
- पृथ्वीराज चौहान तृतीय ने भंडानक जाति एवं नागार्जुन के विद्रोह का दमन किया था।
- **महोबा/तुमुल का युद्ध** - पृथ्वीराज चौहान तृतीय ने अपनी दिग्विजय की नीति के तहत 1182 ई० में **'महोबा के युद्ध / तुमुल का युद्ध'** (उत्तर प्रदेश) में परमर्दी देव चन्देल (परमर्दी देव के सेनापति आल्हा व उदल) को पराजित किया।
- पृथ्वीराज चौहान तृतीय कन्नौज के राजा जयचंद गहड़वाल को हराकर उसकी पुत्री संयोगिता को स्वयंवर से उठाकर ले गया, जिससे पृथ्वीराज चौहान तृतीय एवं जयचंद गहड़वाल के बीच दुश्मनी बढ़ गयी। इसी वजह से तराइन के युद्ध में जयचंद गहड़वाल ने पृथ्वीराज चौहान तृतीय की बजाय मोहम्मद गौरी की सहायता की थी।

तराइन का प्रथम युद्ध (1191 ई.)

तराइन का प्रथम युद्ध 1191 ई० में पृथ्वीराज चौहान तृतीय व मोहम्मद गौरी के मध्य तराइन के मैदान करनाल (हरियाणा) में हुआ। इस युद्ध में पृथ्वीराज चौहान तृतीय की सेना की ओर से गोविंदराज तोमर ने तीर चलाया जिससे मोहम्मद गौरी घायल होकर वापस गजनी चला गया। इस प्रकार पृथ्वीराज चौहान तृतीय विजय हुई।

तराइन का द्वितीय युद्ध (1192 ई.)

तराइन का द्वितीय युद्ध भी पृथ्वीराज चौहान तथा मोहम्मद गौरी बीच लड़ा गया। इसमें मोहम्मद गौरी की विजय हुई। इस युद्ध में पृथ्वीराज चौहान के स्वसुर जयचंद ने मोहम्मद गौरी का साथ दिया, क्योंकि पृथ्वीराज चौहान ने जयचंद की पुत्री संयोगिता का हरण कर उससे विवाह किया था।

1. पृथ्वीराज चौहान के मित्र एवं दरबारी कवि **चंद्रबरदाई ने पृथ्वीराज रासो नामक ग्रन्थ लिखा**
2. **जयानक ने पृथ्वीराज विजय नामक ग्रन्थ लिखा।**
3. सूफी संत **ख्वाज़ा मोइनुद्दीन चिश्ती पृथ्वी राज चौहान के समय अजमेर आये।**
4. पृथ्वीराज चौहान तृतीय के घोड़े का नाम नाट्यरंभा था

रणथम्भौर के चौहान

रणथम्भौर और दिल्ली सल्तनत

- हम्मीर चौहान (1282-1301 ई.) अपने पिता जैत्रसिंह का तीसरा पुत्र था। सभी पुत्रों में योग्य होने के कारण उसका राज्यारोहण उत्सव जैत्रसिंह ने अपने जीवनकाल में ही 1282 ई. में सम्पन्न करवा दिया था।
- वह रणथम्भौर के चौहान शासकों में अंतिम परंतु सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण शासक था और उसके शासनकाल की जानकारी अनेकानेक ऐतिहासिक साधनों से प्राप्त होती है। मुस्लिम इतिहासकारों, अमीर खुसरो तथा जियाउद्दीन बरनी की रचनाओं के अलावा न्यायचंद्र सूरी के हम्मीर महाकाव्य, चंद्रशेखर के सुर्जन चरित्र और बाद में लिखे गये हिन्दी ग्रन्थों - जोधराजकृत हम्मीर रासो तथा चंद्रशेखर के हम्मीर हठ में हमें हम्मीर की शूरवीरता तथा विजयों का विस्तृत विवरण मिलता है।
- दिग्विजय के बाद हम्मीर ने कोटि यज्ञों का आयोजन किया जिससे उसकी प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई।
- मेवाड़ के शासक समरसिंह को पराजित कर हम्मीर ने अपनी धाक सम्पूर्ण राजस्थान में जमा दी।

हम्मीर और जलालुद्दीन खिलजी-

- हम्मीर को अपनी शक्ति बढ़ाने का मौका इसलिए मिल गया कि इस दौरान दिल्ली में कमजोर सुल्तानों के कारण अव्यवस्था का दौर चल रहा था।
- 1290 ई. में दिल्ली का सुल्तान बनने के बाद जलालुद्दीन खिलजी ने हम्मीर की बढ़ती हुई शक्ति को समाप्त करने का निर्णय लिया। सुल्तान ने झाँई पर अधिकार कर रणथम्भौर को घेर लिया किन्तु सभी प्रयत्नों की असफलता के बाद शाही सेना को दिल्ली लौट जाना पड़ा।
- सुल्तान ने 1292 ई. में एक बार फिर रणथम्भौर विजय का प्रयास किया। हम्मीर के सफल प्रतिरोध के कारण इस बार भी उसे निराशा ही हाथ लगी।
- जलालुद्दीन ने यह कहते हुए दुर्ग का घेरा हटा लिया कि "मैं ऐसे सैंकड़ों किलों को भी मुसलमान के एक बाल के बराबर महत्त्व नहीं देता।"
- जलालुद्दीन फिरोज खिलजी के इन अभियानों का आँखों देखा वर्णन **अमीर खुसरो ने 'मिफ्ता-उल-फुतूह'** नामक ग्रंथ में किया है।

हम्मीर और अलाउद्दीन खिलजी –

- 1296 ई. में अलाउद्दीन खिलजी अपने चाचा जलालुद्दीन खिलजी की हत्या कर दिल्ली का सुल्तान बन गया।

अलाउद्दीन खिलजी ने रणथम्भौर पर आक्रमण करने प्रारम्भ कर दिये जिनके निम्नलिखित कारण थे –

1. रणथम्भौर सामरिक दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण था। अलाउद्दीन खिलजी इस अभेद दुर्ग पर अधिकार कर राजपूत नरेशों पर अपनी धाक जमाना चाहता था।
2. रणथम्भौर दिल्ली के काफी निकट था। इस कारण यहाँ के चौहानों की बढ़ती हुई शक्ति को अलाउद्दीन खिलजी किसी भी स्थिति में सहन नहीं कर सकता था।
3. अलाउद्दीन खिलजी से पहले उसके चाचा जलालुद्दीन खिलजी ने इस दुर्ग पर अधिकार करने के लिए दो बार प्रयास किए थे किन्तु वह असफल रहा। अलाउद्दीन खिलजी अपने चाचा की पराजय का बदला लेना चाहता था।
4. अलाउद्दीन खिलजी एक महत्त्वाकांक्षी और साम्राज्यवादी शासक था। रणथम्भौर पर आक्रमण इसी नीति का परिणाम था।

हम्मीर द्वारा अलाउद्दीन खिलजी के विद्रोहियों को शरण देना –

- नयनचन्द्र सूरी की रचना 'हम्मीर महाकाव्य' के अनुसार रणथम्भौर पर आक्रमण का कारण यहाँ के शासक हम्मीर द्वारा अलाउद्दीन खिलजी के विद्रोही सेनापति मीर मुहम्मद शाह को शरण देना था।
- मुस्लिम इतिहासकार इसामी ने भी अपने विवरण में इसी कारण की पुष्टि की है। उन्होंने लिखा है कि 1299 ई. में अलाउद्दीन खिलजी ने अपने दो सेनापतियों उलूग खां व नूसरत खां को गुजरात पर आक्रमण करने के लिए भेजा था।
- गुजरात विजय के बाद जब यह सेना वापिस लौट रही थी तो जालौर के पास लूट के माल के बंटवारे के प्रश्न पर 'नव-मुसलमानों' (जलालुद्दीन फिरोज खिलजी के समय भारत में बस चुके वे मंगोल, जिन्होंने इस्लाम स्वीकार कर लिया था) ने विद्रोह कर दिया। यद्यपि विद्रोहियों का बर्बरता के साथ दमन कर दिया गया किन्तु उनमें से मुहम्मदशाह व उसका भाई कैहब्रु भाग कर रणथम्भौर के शासक हम्मीर के पास पहुँचने में सफल हो गया।
- हम्मीर ने न केवल उन्हें शरण दी अपितु मुहम्मदशाह को 'जगाना' की जागीर भी दी। चन्द्रशेखर की रचना 'हम्मीर हठ' के अनुसार अलाउद्दीन खिलजी की एक मराठा बेगम से मीर मुहम्मदशाह को प्रेम हो गया था और उन दोनों ने

5. जलखेड़ा :-
पुंज के पुत्र सजनविनोद ने तंवरों को परास्त किया और जलंधर की सहायता से जल प्रवाह में बहा दिया। अतः इसके वंशज जलखेड़ा कहलाये।

6. बुगलाणा :-
पुंज के पुत्र पदम बुगलाणा स्थान के नाम से बुगलाणा कहलाये।

7. अहर :-
पुंज के पुत्र अहर के वंशज 'अहर' कहलाये। बंगाल की तरफ चले गए।

8. पारकरा :-
पुंज के पुत्र वासुदेव ने कन्नौज के पास कोई पारकरा नामक नगर बसाया अतः उसके वंशज **'पारकर'** कहलाये।

9. चंदेल :-
दक्षिण में पुंज के पुत्र उग्रप्रभ ने चंदी व चंदावर नगर बसाये अतः चंदी स्थान के नाम से चंदेल कहलाये। (चंदेल-चंद्रवंशी इनसे भिन्न हैं ।)

10. वीर :-
सुबुद्धि या मुक्तामान बड़ा वीर हुआ। इसे वीर की उपाधि दी। इस कारण इनके वंशज वीर राठौड़ कहलाये।

11. दरियावरा :-
भरत ने बरियावर स्थान पर राज्य किया। स्थान के नाम से ये 'बरियावर' कहलाये।

12. खरोदिया :-
कृपासिंधु (अनलकुल) खरोदा स्थान के नाम से खरोदिया राठौड़ कहलाये।

13. जयवंशी :-
चंद्र व इसके वंशज जय पाने के कारण जयवंशी कहलाये।

मारवाड़ का इतिहास

राठौड़ वंश

राजस्थान के उत्तर-पश्चिम भाग में जिस राजपूत वंश का शासन हुआ उसे राठौड़ वंश कहा गया है । उसे मारवाड़ के नाम से जाना जाता है । मारवाड़ में पहले गुर्जर प्रतिहार वंश का राजा था । प्रतिहार यहाँ से कन्नौज (उत्तरप्रदेश) चले गये । फिर राठौड़ वंश की स्थापना इस भाग में हुई, तथा मारवाड़ की संकटकालीन राजधानी 'सिवाना दुर्ग (बालोतरा) को कहा जाता था ।

शाखा	स्थापना	संस्थापक
1. मारवाड़ (जोधपुर)	1240 ई.	राव सीहा
2. बीकानेर	1465 ई.	राव बीका
3. किशनगढ़	1609 ई.	किशनसिंह

हम इस अध्याय में मारवाड़ के राठौड़ वंश का विस्तृत अध्ययन करेंगे ।

उत्पत्ति

- राठौड़ शब्द की उत्पत्ति राष्ट्रकूट शब्द से मानी जाती है।
- पृथ्वीराजरासो, नैणसी, दयालदास और कर्नल टॉड राठौड़ों को कन्नौज के जयचन्द गहड़वाल का वंशज मानते हैं ।
- "राठौड़ वंश महाकाव्य में राठौड़ों की उत्पत्ति शिव के शीश पर स्थित चन्द्रमा से बताई है ।
- डॉ. हार्नली ने सर्वप्रथम राठौड़ों को गहड़वालों से भिन्न माना है । इस मत का समर्थन डा. ओझा ने किया है ।
- डॉ. ओझा ने मारवाड़ के राठौड़ों को बदायूँ के राठौड़ों का वंशज माना है ।

मारवाड़ (जोधपुर) के राठौड़ संस्थापक – राव सीहा (1240 – 1273)

- राव सीहा जी राजस्थान में स्वतंत्र राठौड़ राज्य के संस्थापक थे । राव सीहा जी के वीर वंशज अपने शौर्य, वीरता एवं पराक्रम व तलवार के धनी रहे हैं । मारवाड़ में राव सीहा जी द्वारा राठौड़ साम्राज्य का विस्तार करने में उनके वंशजो में राव धुहड़ जी, राजपाल जी, जालन सिंह जी, राव छाड़ा जी, राव तीड़ा जी, खीम करण जी, राव वीरम दे, राव चूँड़ा जी, राव रिड़मल जी, राव जोधा, राव बीका, बीदा, दूदा, कानध्ल, मालदेव का विशेष क्रमबद्ध योगदान रहा है। इनके वंशजों में दुर्गादास व अमर सिंह जैसे इतिहास प्रसिद्ध व्यक्ति हुए । राव सिहा सेतराम जी के आठ पुत्रों में सबसे बड़े थे।

चेतराम सम्राट के, पुत्र अस्ट महावीर !
जिसमें सिहों जेस्ठ सूत, महारथी रणधीर ।

- राव सीहा जी सं. 1268 के लगभग पुष्कर की तीर्थ यात्रा के समय मारवाड़ आये थे उस मारवाड़ की जनता मीणों, मेरों आदि की लूटपाट से पीड़ित थी, राव सिहा के आगमन की सूचना पर पाली नगर के पालीवाल ब्राह्मण अपने मुखिया जसोधर के साथ सीहा जी मिलकर पाली नगर को लूटपाट व अत्याचारों से मुक्त करने की प्रार्थना की । अपनी तीर्थ यात्रा से लौटने के बाद राव सीहा जी ने भाइयों व फलौदी के जगमाल की सहायता से पाली में हो रहे अत्याचारों पर काबू पा लिया एवं वहां शांति व शासन व्यवस्था कायम की, जिससे पाली नगर की व्यापारिक उन्नति होने लगी।

आठों में सीहा बड़ा, देव गरुड़ है साथ ।
बनकर छोडिया कन्नोज में, पाली मारा हाथ ।
पाली के अलावा भीनमाल के शासक के अत्याचारों की जनता की शिकायत पर जनता को अत्याचारों से मुक्त कराया ।
भीनमाल लिधी भडे,सिहे साल बजाय।
दत दीन्हो सत सग्रहियो, ओजस कठे न जाय।

- पाली व भीनमाल में राठौड़ राज्य स्थापित करने के बाद सीहा जी ने खेड़ पर आक्रमण कर विजय कर लिया।

- इसी दौरान शाही सेना ने अचानक पाली पर हमला कर लूटपाट शुरू करदी, हमले की सूचना मिलते ही सीहा जी पाली से 18 किलोमीटर दूर बिठू गावं में शाही सेना के खिलाफ आ डटे, और मुस्लिम सेना को खधेड़ दिया । वि. सं. 1330 कार्तिक कृष्ण द्वादशी सोमवार को करीब 80 वर्ष की उम्र में सीहा जी का स्वर्गवास हुआ व उनकी सोलंकी रानी पार्वती इनके साथ सती हुई ।
- सीहा जी की रानी (पाटन के शासक जय सिंह सोलंकी की पुत्री) से बड़े पुत्र आसनाथ जी हुए जो पिता के बाद मारवाड़ के शासक बने । राव सिहं जी राजस्थान में राठौड़ राज्य की नींव डालने वाले पहले व्यक्ति थे ।

आसनाथ (1273 – 1291 ई.)

- सीहा के बाद आसनाथ राठौड़ों का शासक बना। उसने गूँदोच को केन्द्र बनाया। 1291 ई. में सुल्तान जलालुद्दीन खिलजी के आक्रमण के समय पाली की रक्षा करते हुए आसनाथ 1291 ई. में वीरगति को प्राप्त हुआ ।
- आसनाथ के पुत्र धूहड़ ने राठौड़ों की कुलदेवी चक्रेश्वरी नागणेचीद्ध की मूर्ति कर्नाटक से लाकर नगाणा गांव (बाड़मेर) मे स्थापित कराई ।
- इनके छोटे भाई का नाम धांधलश् था। ये लोक देवता पाबू जी के पिता थे।

राव चूँड़ा (1383 – 1423)

- राव चूँड़ा विरमदेव का पुत्र था ।
- राव चूँड़ा राठौड़ों का प्रथम महत्वपूर्ण शासक माना जाता है । अपने पिता की मृत्यु के समय चूँड़ा छः वर्ष का था । इसलिए उसकी माता ने उसे चाचा मल्लिनाथ के पास भेज दिया। मल्लिनाथ ने चूँड़ा को सालोड़ी गाँव जागीर में दी थी।
- उसने इन्दा शाखा के राजा की पुत्री किशोर कुंवरी (मण्डौर ए जोधपुर) से विवाह किया तथा दहेज में उसे मण्डौर दुर्ग मिला ।
- चूँड़ा ने इन्दा परिहारों के साथ मिलकर मण्डौर को मालवा के सूबेदार से छीन लिया तथा मण्डौर को अपनी राजधानी बनाया।
- इस प्रकार इन्दा परिहारों को अपना सहयोगी बनाकर राव चूँड़ा ने मारवाड़ में सामन्त प्रथा की स्थापना की।
- उसने जलाल खाँ खोखर को पराजित कर नागौर पर अधिकार कर लिया था।
- परन्तु जैसलमेर के भाटियों और जांगल प्रदेश के सांखलाओं के नागौर पर आक्रमण के समय 1423 ई. में चूँड़ा मारा गया ।
- राव चूँड़ा ने डीडवाना-कुचामन में चूण्डासर कस्बा बसाया।
- उसकी रानी चाँद कँवर ने जोधपुर की चाँद बावड़ी का निर्माण करवाया था ।

रावल मल्लिनाथ

- राजस्थान के प्रसिद्ध लोक देवता हैं इन्होंने अपनी राजधानी 'मेवानगर' (नाकोड़ा, बालोतरा) बनायी। मल्लीनाथ के नाम पर ही मारवाड़ क्षेत्र को मालाणी कहते हैं ।
- भाई 'वीरम' (मल्लीनाथ ने अपने बेटे जगमाल को राजा न बनाकर वीरम को राजा बना दिया।)

कान्हा (1423 – 1427)

चूँड़ा ने अपनी मोहिलाणी रानी के प्रभाव में आकर उसके पुत्र कान्हा को अपना उत्तराधिकारी बनाया जबकि रणमल, चूँड़ा का ज्येष्ठ पुत्र था।

- रणमल मेवाड़ के राणा लाखा की शरण में चला गया तथा अपनी बहन हंसाबाई का विवाह लाखा से कर दिया। राणा ने उसे धणला गाँव जागीर में दिया।
- 1427 ई. में रणमल ने राणा मोकल की सहायता से मण्डौर पर अधिकार कर लिया। इस समय कान्हा का उत्तराधिकारी सत्ता मण्डौर का शासक था।
- ऐसा कहा जाता है कि राव कान्हा की मृत्यु 'करणी माता के हाथों हुई थी ।

राव रणमल, - (1427 – 1438)

राव रणमल, राव चूँड़ा का ज्येष्ठ पुत्र था जो उन्हें रानी चाँद कँवर से हुआ था ।

- परन्तु जब उसे राजा नहीं बनाया गया तो वह नाराज होकर मेवाड़ के राणा लक्ष सिंह (लाखा) की शरण में चला गया।
- राणा लाखा ने रणमल को 'धणला' की जागीर प्रदान की।
- रणमल ने अपनी बहन हंसाबाई का विवाह राणा लाखा से कर दिया । परन्तु उसने एक शर्त रखी जिसके अनुसार हंसाबाई का पुत्र ही मेवाड़ का शासक बने ।
- रणमल ने अपने समय में मारवाड़ और मेवाड़ रियासतों पर मजबूत नियंत्रण बना रखा था।
- रणमल ने अपने भाई तथा मारवाड़ के राजा 'कान्हा के साथ युद्ध किया तथा इस युद्ध में रणमल का साथ मेवाड़ के मोकल ने दिया । इस युद्ध में कान्हा मारा गया ।
- मेवाड़ी सरदारों ने 1438 ई. में उसकी प्रेयसी भारमली की सहायता से चित्तौड़ में रणमल की हत्या कर दी । ऐसा कहा जाता है कि उसे उसकी प्रेयसी भारमली ने शराब में विष दिया था । इस तरह रणमल का अंत हुआ।

राव जोधा (1438 – 1489)

1. राव 'रणमल' को रानी 'कोडमद' से जो पुत्र हुआ वहीं राव जोधा था ।
2. पिता रणमल की हत्या के बाद जोधा ने चित्तौड़ से भागकर बीकानेर के समीप काहुनी गाँव में शरण ली ।
3. चूँड़ा के नेतृत्व में मेवाड़ की सेना ने राठौड़ों की राजधानी मण्डौर पर अधिकार कर लिया। 15 वर्ष बाद राव जोधा मण्डौर पर पुनः अधिकार कर पाया।
4. राव जोधा ने 1453 ई. में मण्डौर राज्य को अपने अधीन किया ।
5. राव जोधा ने 13 मई 1459 ई. में जोधपुर नगर बसाया

दुर्गादास राठौड़ -

- राजपूताने का गेरीबावड़ी
- राठौड़ का युलीसेज
- गौरा को मारवाड़ की पन्नाधाय कहा जाता है
- **गिंगोली युद्ध**
- भीमसिंह तथा जगतसिंह IInd के मध्य 1807 में हुआ
- 1857 की क्रांति के समय जोधपुर का शासक तख्तसिंह
- उम्मेद सिंह ने जवाई बांध का निर्माण करवाया
- कच्छवाहा वंश का संस्थापक कोकिल देव था
- भारमल प्रथम शासक जिसने अंग्रेजो की अधीनता स्वीकार की
- मानसिंह को अकबर ने फर्जन्द की उपाधि दी।
- सवाई जयसिंह ने 1734 ई. में हुरड़ा सम्मेलन आयोजित किया।
- सवाई जयसिंह ने दिल्ली, बनारस, उज्जैन, मथुरा, जयपुर में 5 सौर वेध शालाओं का निर्माण कराया।
- सवाई रामसिंह ने 1876 ई. में जयपुर को गुलाबी रंग से रंगवाया।
- राव बिका ने करणी माता के मूल मंदिर का निर्माण करवाया
- राव जैतसी ने खानवा के युद्ध में अपने पुत्र कल्याणमल को भेजा।
- पृथ्वीराज राठौर नागौर दरबार में उपस्थित हुआ
- महाराजा रायसिंह को राजपूताने का कर्ण कहा जाता है।
- सूरतसिंह ने हनुमानगढ़ बसाया
- एकीकरण विलय पत्र पर हस्ताक्षर करने वाली प्रथम रियासत बीकानेर थी।
- सार्दुलसिंह बीकानेर के राठौर वंश अंतिम शासक था,
- किशनसिंह ने 1612में किशनगढ़ बसाया
- महाराजा सावंतसिंह ने कृष्ण भक्ति में अपना नाम नागरीदास रखा
- महाराजा सुमेरसिंह के समय किशनगढ़ को 25मार्च 1948 में राजस्थान संघ में मिला लिया गया
- मालवा के परमारों की उत्पति आबू से मानी जातीहै।
- चूड़ामन जाट ने भरतपुर में जाट राज्य की स्थापना की,
- महाराजा सूरजमल ने लोहागढ़ दुर्ग का निर्माण करवाया
- राजा केहर ने तनोटमाता मंदिर का निर्माण करवाया
- राव घड़सी ने जैसलमेर में घड़सीसर तालाब का निर्माण करवाया
- विजयपाल करौली का संस्थापक था।
- हरवक्षपाल ने 15 नवंबर 1817 में अंग्रेजो से संधि की।

अभ्यास प्रश्न

1. महाराणा अमरसिंह और खुर्रम के मध्य संधि कब हुई ?
(a) 5-2-1680 (b) 19-1-1567
(b) 5-2-1615 (d) 5-2-1667 **(c)**

2. मेवाड़ की राजकुमारी कृष्णा कुमारी, जिसके विवाह के कारण जयपुर एवं जोधपुर के मध्य संघर्ष हुआ, पुत्री थी?
(a) महाराणा भीमसिंह
(b) महाराणा जगतसिंह द्वितीय
(c) महाराणा उदयसिंह
(d) इनमें से कोई नहीं **(a)**

3. महेन्द्रपाल उत्तराधिकारी था-
(a) देवराज का (b) महिरभोज का
(c) नागभट्ट का (d) वत्सराज का **(b)**

4. बीकानेर शासक करण सिंह कौन से मुगल सम्राट के समकालीन थे-
(a) शाहजहां (b) औरंगजेब
(c) अकबर (d) हुमायूं **(a)**

5. दुर्गादास राठौड़ ने अपने जीवन के अंतिम दिन कहा गुजारे थे-
(a) उज्जैन में (b) उदयपुर
(c) चित्तौड़ (d) भरतपुर **(a)**

6. किस राजपूत शासक को राजपुताना के कर्ण कहा जाता है
(a) महाराजा रायसिंह
(b) महाराजा जयसिंह
(c) राणा उदय सिंह
(d) राव जोधा **(a)**

7. महाराणा अमरसिंह और खुर्रम के मध्य संधि कब हुई ?
(a) 5-2-1680 (b) 19-1-1567
(c) 5-2-1615 (d) 5-2-1667 **(c)**

8. मेवाड़ की राजकुमारी कृष्णा कुमारी, जिसके विवाह के कारण जयपुर एवं जोधपुर के मध्य संघर्ष हुआ, पुत्री थी?
(a) महाराणा भीमसिंह
(b) महाराणा जगतसिंह द्वितीय
(c) महाराणा उदयसिंह
(d) इनमें से कोई नहीं **(a)**

9. 1527 ई. में महाराणा सांगा एवं बाबर के मध्य खानवा का युद्ध किस जिले में हुआ?
(a) भरतपुर (b) दौसा
(c) अलवर (d) उदयपुर **(a)**

10. जाटों का प्लेटो किसे कहा जाता है?
(a) गोकुल जाट (b) सूरजमल
(b) बदन सिंह (d) राजाराम जाट **(b)**

अध्याय - 6

आधुनिक राजस्थान

राजस्थान की रियासतें और ब्रिटिश संधियां				
क्र. सं.	संधिकर्त्ता राज्य	संधि के समय शासक	संधि की तिथि	अंग्रेज कम्पनी को दी जाने वाली खिराज राशि
1.	करौली	हरबक्षपालसिंह	9 नवम्बर, 1817	खिराज से मुक्त
2.	टोंक	अमीर खाँ	15 नवम्बर, 1817	-
3.	कोटा	उम्मेद सिंह	26 दिसम्बर, 1817	2,44,700 रु.
4.	जोधपुर	मानसिंह	6 जनवरी, 1818	1,08,000 रु.
5.	उदयपुर	भीमसिंह	22 जनवरी, 1818	राज्य की आय का 1/4 भाग
6.	बूँदी	विसनसिंह	10 फरवरी, 1818	80,000 रु.
7.	बीकानेर	सूरतसिंह	21 मार्च, 1818	मराठों को खिराज नहीं देता था, इसलिए खिराज से मुक्त
8.	किशनगढ़	कल्याणसिंह	7 अप्रैल , 1818	खिराज से मुक्त
9.	जयपुर	जगतसिंह	15 अप्रैल , 1818	संधि के प्रथम वर्ष कुछ नहीं, दूसरे वर्ष 4 लाख, चौथे वर्ष 6 लाख, पाँचवें वर्ष 7 लाख, छठें वर्ष 8 लाख फिर 8 लाख निश्चित।
10.	जैसलमेर	मूलराज	2 जनवरी, 1819	मराठों को खिराज नहीं देता था, अतः खिराज से मुक्त।
11.	प्रतापगढ़	सामन्तसिंह	5 अक्टूबर, 1818	धार राज्य को दिया जाने वाला खिराज अब कम्पनी को।

राजस्थान की रियासतें और ब्रिटिश संधियां				
क्र. सं.	संधिकर्त्ता राज्य	संधि के समय शासक	संधि की तिथि	अंग्रेज कम्पनी को दी जाने वाली खिराज राशि
12.	डूंगरपुर	जसवन्त सिंह द्वितीय	1818 ई.	धार राज्य को दिया जाने वाला खिराज अब कम्पनी को।
13.	बाँसवाड़ा	उम्मेदसिंह	25 दिसम्बर, 1818	धार राज्य को दिया जाने वाला खिराज अब कम्पनी को।
14.	सिरोही	शिवसिंह	11 सितम्बर, 1823	संधि के तीन वर्ष तक खिराज से मुक्त उसके बाद आय के प्रति रुपये पर छः आना।
15.	झालावाड़	मदनसिंह	10 अप्रैल, 1838	80,000 रु. वार्षिक।

प्रश्न- राजपूताना की निम्नलिखित रियासतों ने 1817-1818 ई. में ईस्ट इण्डिया कम्पनी के साथ संधि पर हस्ताक्षर किये -(RAS Pre 2013)

(1) कोटा (2) जोधपुर
(3) करौली (4) उदयपुर

निम्नलिखित में से कौन-सा अनुक्रम, कालाक्रमानुसार सही है ?

(a) (1), (2), (3), (4)
(b) (3), (4), (1), (2)
(c) (4), (1), (2), (3)
(d) (3), (1), (2), (4) (d)

- 1707 ई. में औरंगजेब की मृत्यु के साथ ही राजपूत राज्यों पर मुग़ल केन्द्रीय सत्ता का नियंत्रण ढीला पड़ गया।
- सभी राजपूत राज्य अपने राज्य का विस्तार करने तथा पड़ोसी राज्य पर राजनैतिक वर्चस्व स्थापित कर अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करने के प्रयत्न में लग गए।
- इस प्रकार के प्रयत्नों के फलस्वरुप राजपूत राज्यों में पारस्परिक संघर्ष बढ़ गये।
- शासकों ने पारस्परिक संघर्षों में सहायता प्राप्त करने के लिए बाहरी ताकतों (मराठा, अंग्रेज, होल्कर आदि) का सहारा लेने लगे।
- जब राज्यों में उत्तराधिकार संघर्ष में मराठों का हस्तक्षेप हुआ तो राजपूताना के शासकों ने मराठा के विरुद्ध ईस्ट इण्डिया कम्पनी से सहायता माँगी लेकिन अंग्रेजों ने इन प्रस्तावों पर ध्यान नहीं दिया क्योंकि उस समय अंग्रेजों की नीति राजपूताना के लिए मराठों से युद्ध करने की नहीं थी।
- भारत में ईस्ट इण्डिया कम्पनी का आगमन 1600 ई. में हुआ था।
- 1757 ई. में प्लासी युद्ध के पश्चात् ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने पहली बार भारत में बंगाल में) राजनीतिक सत्ता प्राप्त की।
- रॉबर्ट क्लाइव सन् 1757 में बंगाल का प्रथम गवर्नर बना।
- 1764 ई. के बक्सर युद्ध के पश्चात् हुई इलाहाबाद संधि ने कम्पनी को भारत में पूर्णतः राजनीतिक शक्ति प्रदान की।
- वारेन हेस्टिंग्स 1772 ई. में बंगाल के प्रथम गवर्नर जनरल बने।
- वारेन हेस्टिंग्स ने सुरक्षा घेरे की नीति (पॉलिसी ऑफ रिंग फेंस) को अपनाया जिसके अनुसार कम्पनी द्वारा अपने अधिकृत प्रदेशों को शत्रुओं से सुरक्षा के लिए पड़ौसी राज्यों के साथ मैत्री संधि कर उन्हें बफर राज्यों के रूप में प्रयुक्त किया जाता था।
- लॉर्ड कार्नवालिस ने भारतीय शासकों के मामलों में अहस्तक्षेप की नीति अपनाई ।
- 1798 ई. में लॉर्ड वेलेजली ने देशी राज्यों के साथ सहायक संधि की नीति अपनाई।
- इस नीति के तहत देशी राज्यों की आंतरिक सुरक्षा व विदेशी नीति का उत्तरदायित्व अंग्रेजों पर था जिसका खर्च संबंधित राज्य को उठाना पड़ता था।
- कम्पनी इस हेतु उस राज्य में एक अंग्रेज रेजीडेन्ट की नियुक्ति करती थी एवं सुरक्षा हेतु उस देशी राज्य के खर्च पर अपनी सेना रखती थी।
- भारत में प्रथम सहायक संधि 1798 ई. में हैदराबाद के निजाम के साथ की गई।

5. कोटा महाराव एवं उसके उत्तराधिकारी किसी अन्य शक्ति से विवाद होने पर अंग्रेजों को मध्यस्थ बनाएंगे।
6. कोटा राज्य मराठों को जो खिराज देता था, वह अब कम्पनी सरकार को देगा।
7. कोटा के महाराव एवं उनके उत्तराधिकारी अपने राज्य के शासक बने रहेंगे। कम्पनी उनके आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करेगी।
8. कोटा महाराव और उसके उत्तराधिकारी सदैव अंग्रेज सरकार की अधीनता में रहते हुए उसे सहयोग देते रहेंगे।

20 फरवरी, 1818 को झाला जालिमसिंह द्वारा अंग्रेजों से पूरक संधि कर दो नयी शर्तें जोड़ी गई।

राजस्थान में 1857 की क्रांति में हुए प्रमुख विद्रोह

- कर्नल जेम्स टॉड पहला व्यक्ति था जिसने राजस्थान का सर्वप्रथम सुव्यवस्थित इतिहास लिखा इसीलिए कर्नल जेम्स टॉड को राजस्थान के इतिहास का पिता कहा जाता है।
- इतिहासकार गौरीशंकर हीराचंद ओझा ने कर्नल जेम्स टॉड के इतिहास लेखन की गलतियों को दूर किया इसीलिए गौरीशंकर हीराचंद ओझा को राजस्थान के इतिहास का वैज्ञानिक पिता कहा जाता है।
- घोड़े वाले बाबा उपनाम से इतिहास में प्रसिद्ध कर्नल जेम्स टॉड के गुरु ज्ञानचंद थे। कर्नल जेम्स टॉड ने पृथ्वीराज रासो के लगभग 30000 हजार दोहो, का अंग्रेजी में अनुवाद किया था।
- ब्रिटिश सरकार ने कर्नल जेम्स टॉड को 1818 से 1822 के मध्य पश्चिमी राजपूत राज्यों का पॉलिटिकल एजेंट नियुक्त किया जिसमें 6 रियासतें शामिल थी

  1-कोटा
  2- बूँदी
  3-जोधपुर
  4-उदयपुर
  5-सिरोही
  6-जैसलमेर

1857 के विद्रोह के संदर्भ में विभिन्न मत

- डॉ. रामविलास शर्मा- यह स्वतंत्रता संग्राम था।
- डॉ. रामविलास शर्मा- यह जनक्रांति थी।
- डिजरायली बेंजामिन डिजरैली – यह राष्ट्रीय विद्रोह था।
- वी. डी. सावरकर- यह स्वतंत्रता की पहली लड़ाई थी (पुस्तक द इंडियन वॉर ऑफ इंडिपेंडेंस)।
- एस.एन. सेन- यह विद्रोह राष्ट्रीयता के अभाव में स्वतंत्रता संग्राम था।
- सर जॉन लॉरेंस, के. मैलेसन, ट्रैविलियन, सीले- 1857 की क्रांति एक सिपाही विद्रोह था (इस विचार से भारतीय समकालीन लेखक मुंशी जीवनलाल दुर्गादास बंदोपाध्याय सैयद अहमद खाँ भी सहमत है।)
- जवाहरलाल नेहरु - यह विद्रोह मुख्यतः सामन्तशाही विद्रोह था।
- सर जेम्स आउट्रम और डब्लयू टेलर ने इसको - यह विद्रोह हिंदू-मुस्लिम का परिणाम था कहा है।

क्रांति के प्रमुख कारण

- देशी रियासतों के राजा मराठा व पिण्डारियों से छुटकारा पाना चाहते थे।
- लॉर्ड डलहौजी की राज्य विलय की नीतियाँ।
- चर्बी लगे कारतुस का प्रयोग (एनफील्ड)।
- 1857 के विद्रोह का प्रारंभ 29 मार्च 1857 को बैरकपुर छावनी (पश्चिम बंगाल) की 34वीं नेटिव इन्फेंट्री के सिपाही मंगल पांडे के विद्रोह के साथ हुआ किन्तु संगठित क्रांति 10 मई 1857 को मेरठ (उत्तर प्रदेश) छावनी से प्रारंभ हुई थी।
- 1857 की क्रांति का तत्कालीन कारण चर्बी वाले कारतूस माने जाते हैं, जिनका प्रयोग एनफील्ड राइफल में किया जाता था। इस रायफल के बारे में भारतीय सैनिकों में अफवाह फैली की इनमें लगने वाले कारतूसों में गाय तथा सूअर की चर्बी लगी होती है।
- कारतूस का प्रयोग करने से पूर्व उसके खोल को मुंह से उतरना पड़ता था जिससे हिंदू तथा मुस्लिमों का धर्म भ्रष्ट होता है। परिणाम स्वरूप 1857 का विद्रोह प्रारंभ हुआ।
- 1857 की क्रांति के समय राजपूताना उत्तरी पश्चिमी सीमांत प्रांत के प्रशासनिक नियंत्रण में था जिसका मुख्यालय आगरा में था इस प्रांत का लेफ्टिनेंट गवर्नर कोलविन था।
- अजमेर- मेरवाड़ा का प्रशासन कर्नल डिक्सन के हाथों में था क्रांति के समय राजपुताना का ए.जी.जी जॉर्ज पैट्रिक लॉरेंस था जिस का मुख्यालय माउंट आबू में स्थित था अजमेर राजपूताना की प्रशासनिक राजधानी था और अजमेर में ही अंग्रेजों का खजाना और शस्त्रागार स्थित था।
- अजमेर की रक्षा की जिम्मेदारी 15वीं नेटिव इन्फैंट्री बटालियन के स्थान पर ब्यावर से बुलाई गई, लेफ्टिनेंट कारनेल के नेतृत्व वाली रेजिमेंट को दे दी गई मेरठ विद्रोह की खबर 19 मई 1857 को माउंट आबू पहुंची।

  इस क्रांति का प्रतीक चिह्न रोटी और कमल का फूल था।

राजस्थान में क्रांति के समय पॉलिटिकल एजेंट			
1.	कोटा रियासत में	-	मेजर बर्टन
2.	जोधपुर रियासत में	-	मेक मेंसन
3.	भरतपुर रियासत में	-	मोरिशन
4.	जयपुर रियासत में	-	कर्नल ईडन
5.	उदयपुर रियासत में	-	शावर्स ओर
6.	सिरोही रियासत में	-	जे.डी.हॉल

राजस्थान में क्रांति के समय राजपूत शासक

राजस्थान में क्रांति के समय राजपूत शासक		
कोटा रियासत में	-	रामसिंह
जोधपुर रियासत में	-	तख्तसिंह
भरतपुर रियासत में	-	जसवंत सिंह

अध्याय- 3

प्रदर्शन कला

- **शास्त्रीय संगीत**
- **शास्त्रीय नृत्य**
- **लोक संगीत एवं वाद्ययन्त्र**
- **लोक नृत्य एवं नाट्य**

➢ संगीत से तात्पर्य गायन, वादन एवं नृत्य से है और यही तीन पक्ष इसके विकास के द्योतक हैं ।
संगीत कला को दो भागों में बांटा जाता है-

संगीत कला
- शास्त्रीय संगीत
  - हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत
    - हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु और केरल को छोडकर सम्पूर्ण भारत में प्रचलित है। ध्रुपद,धमर,होरी,ख्याल,टप्पा,चतुरंग, रससागर,तराना, सरगम और ठुमरी जैसी हिंदुस्तानी संगीत में गायन की दस मुख्य शैलियाँ हैं।
  - कर्नाटक शास्त्रीय संगीत
    - कर्नाटक संगीत कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु और केरल तक सीमित है।
- लोक गीत
  - राजस्थानी लोकगीतों में विरह गीत, श्रंगारिक गीत, महफ़िल गीत, चेतावनी गीत, फसल गीत लोकदेवताओं व देवियों से सबंधित तथा क्षेत्र विशेष के होते है

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

शास्त्रीय संगीत

- यह एक विशिष्ट गायन , वादन तथा नृत्य शैली का सूचक होता है जिसमें निश्चित नियमों का पालन किया जाता है ।
- इसमें भारतीय एवं ईरानी संगीत का समन्वय हुआ है ।
- भारतीय शास्त्रीय संगीत की परम्परा का संरक्षण विशिष्ट गुरु तथा शिष्य परम्परा के संयोग से बनता है , उस विशिष्ट गुरु शिष्य परम्परा को ' घराना ' कहा जाता है ।

- **राजस्थान में गायन, वादन व नृत्य के प्रमुख घराने**

राजस्थान में गायन के प्रमुख घराने

घराना	प्रवर्तक	विशेषताएँ
जयपुर घराना	मनरंग (भूपत खां)	ख्याल गायन शैली का घराना है। मुहम्मद अली खां कोठी वाले इस घराने के प्रसिद्ध संगीतज्ञ हुए हैं।
पटियाला घराना	फ़तेह अली व अली बख्श(टोंक के नवाब इब्राहीम के दरबारी)	यह जयपुर घराने की उपशाखा है।(प्रसिद्ध पाकिस्तानी गजल गायक गुलाम अली इसी घराने के सदस्य हैं)
मेवाती घराना	उस्ताद घग्घे नजीर खां	इन्होंने जयपुर की ख्याल गायकी को ही अपनी विशिष्ट शैली में विकसित कर यह घराना प्रारम्भ किया।
डागर घराना	बहराम खां डागर	महाराजा रामसिंह के दरबारी गायक
रंगीला घराना	रमजान खां 'मियाँ रंगीले	मियाँ रंगीले जोधपुर के गायक इमाम बख्श के शिष्य थे।

राजस्थान में वादन के प्रमुख घराने

घराना	प्रवर्तक	विशेषताएँ
बीनकार घराना(जयपुर)	रज्जब अली बीनकार	रज्जब अली जयपुर के महाराजा रामसिंह के दरबार में प्रसिद्ध बीनकार थे।

सेनिया घराना(जयपुर)	तानसेन के पुत्र सूरत सेन	यह सितारवादियों का घराना है। इस घराने के गायक ध्रुपद की गौहर वाणी व खण्डारवाणी में सिद्धहस्त थे।

राजस्थान की प्रमुख स्थानीय गायन शैलियाँ

(i) माँड गायिकी

- माँड क्षेत्र (जैसलमेर) में गाई जाने वाली राग ' माँड ' राग कहलाई।
- राज्य की प्रसिद्ध माड गायिकाएँ - श्रीमती बन्नो बेगम (जयपुर) स्व. हाजन अल्लाह - जिलाह बाई (बीकानेर), स्व . गवरी देवी (बीकानेर), गवरी देवी (पाली), माँगीबाई (उदयपुर), श्रीमती जमीला बानो
(जोधपुर) आदि ।

(ii) मांगणियार गायिकी

- माँगणियार मुस्लिम मूलतः सिंध प्रांत के है।
- राजस्थान की पश्चिमी मरुस्थलीय सीमावर्ती क्षेत्रों बाड़मेर, जैसलमेर, फलौदी आदि में मांगणियार जाति के लोगों द्वारा अपने यजमानों के यहाँ मांगलिक अवसरों पर गायी जाती है।
जाती है।
- मांगणियार गायिकी में मुख्यतः 6 राग एवं 36 रागनियाँ होती है ।
- इनके प्रमुख वाद्य कमायचा , खड़ताल आदि है।
- प्रमुख मांगणियार कलाकार -साकर खाँ मांगणियार (कमायचा वादक) साफर खाँ (ढोलक वादक), स्व. सद्दीक खाँ मांगणियार (प्रसिद्ध खड़ताल वादक) ।

(iii) लंगा गायिकी

- बीकानेर, बाड़मेर, फलौदी एवं जैसलमेर जिले के पश्चिमी क्षेत्रों में मांगणियारों की तरह मांगलिक अवसरों एवं उत्सवों पर लंगा जाति के गायकों द्वारा गायी जाने वाली गायन शैली 'लंगा गायिकी' कहलाती है।
- सारंगी व कमायचा इनके प्रमुख वाद्य है।
- राजपूत इनके यजमान होते है।
- प्रमुख लंगा कलाकार- फूसे खाँ , महरदीन लंगा , अल्लादीन लंगा , करीम खाँ लंगा ।

(iv) तालबंदी गायिकी

- राजस्थान के पूर्वी अंचल में लोक गायन की शास्त्रीय परम्परा है, जिसमें राग-रागनियों से निबद्ध प्राचीन कवियों की पदावलियाँ सामूहिक रूप से गायी जाती है, इसे ही 'तालबंदी' गायिकी कहते है ।

- इसमें प्रमुख वाद्य सारंगी, हारमोनियम, ढोलक, तबला व झाँझ है एवं बीच-बीच में नगाड़ा भी बजाते है।

राजस्थान में नृत्य के प्रमुख घराने

घराना	प्रवर्तक	विशेषताएँ
जयपुर का कथक घराना	भानूजी	उत्तर भारत के प्रसिद्ध शासीय नृत्य कथक का उद्भव राजस्थान में 13वीं सदी में माना जाता है।

राजस्थान के प्रमुख संगीत ग्रंथ

❖ **संगीत राज**

➢ इसकी रचना मेवाड़ के महाराणा कुम्भा द्वारा 15 वीं सदी में की गई।

➢ ये पाँच कोषो पाठ्य, गीत, वाद्य, नृत्य और रस रत्नकोष आदि में विभक्त है। इसे 'उल्लास कहा गहै।

➢ उल्लास को पुनः परीक्षण में बांटा गया है।

➢ इसमें ताल, राग, वाद्य, नृत्य, रस, स्वर आदि का विस्तार से वर्णन किया गया है।

❖ **राग मंजरी**

➢ इसकी रचना पुण्डरीक विट्ठल ने की थी।

➢ ये जयपुर महाराजा मानसिंह के दरबारी थे।

राग मंजरी के लेखक हैं [RAS - 99]
(a) महाराणा कुंभा **(b) पुण्डरीक विट्ठल**
(c) महाराणा प्रताप (d) महाकवि पद्माकर

❖ **राग माला**

➢ इस ग्रंथ की रचना भी पुण्डरीक विट्ठल ने की थी।

➢ इसमें राग रागिनी व शुद्ध स्वर-सप्तक का उल्लेख किया गया है।

❖ **शृंगार हार**

➢ रणथम्भौर के शासक हम्मीर देव ने इस ग्रंथ की रचना की थी।

❖ **राधागोविन्द संगीत सागर**

➢ इसकी रचना जयपुर के महाराजा सवाई प्रतापसिंह के द्वारा करवाई गई ।

➢ इस ग्रंथ के लेखन में इनके राजकवि देवर्षि बृजपाल भट्ट का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

➢ इस ग्रंथ में बिलावल को शुद्ध स्वर सप्तक कहा गया है।

प्रश्न - शास्त्रीय संगीत पर रचना ' राधा गोविन्द संगीत सार' के रचियता थे [RAS - 2000]
(a) देवर्षि ब्रजपाल भट्ट (b) हीरानंद व्यास
(c) देवर्षि भट्ट द्वारका नाथ (d) चतुर लाल सेन

गींदड़

- शेखावाटी क्षेत्र का सबसे लोकप्रिय एवं बहुप्रचलित लोकनृत्य, जो होली से पूर्व 'डांडा रोपण' से प्रारम्भ होकर होली के बाद तक चलता है।
- यह पुरुष प्रधान नृत्य है।
- गींदड़ नाचने वालों को 'गींदड़िया' तथा स्त्रियों का स्वांग करने वालों को 'गणगौर' कहा जाता है।
- नृत्य में विभिन्न प्रकार के स्वांग करते हैं जिसमें सेठ-सेठानी, दूल्हा दुल्हन, डाकिया-डाकिन, के स्वांग प्रमुख हैं।

ढप नृत्य

- बसंत पंचमी पर शेखावटी क्षेत्र में ढप व मंजीरे बजाते हुए किया जाने वाला नृत्य ढप नृत्य कहलाता है।

लहूर नृत्य

- लहूर नृत्य मुख्यतः शेखावटी क्षेत्रों में मस्ती के माहौल में उमंगों के साथ प्रसिद्ध अभिनेता तथा अभिनेत्रियों द्वारा अभिनय नृत्य किया जाता है।
- लहूर शब्द को राजधानी भाषा में मीठी खुजली कहा जाता है।
- इस नृत्य में मूल कथानक नहीं होता है।

जिंदाद नृत्य

- यह नृत्य शेखावटी क्षेत्र में स्त्री - पुरुषों द्वारा किया जाता है ।
- इस नृत्य में मुख्य वाद्य यंत्र ढोलकी होता है ।

अग्नि नृत्य

- बीकानेर के जसनाथी सिद्धों द्वारा 'फतै-फतै' के उद्घोष के साथ तपते अंगारों पर किया जाने वाला यह नृत्य दर्शकों (भक्तों) को रोमांचित कर देता है ।
- यह नृत्य फाल्गुन-चैत्र के महीनों में किया जाता है।
- इस अवसर पर नगाड़ा वाद्य यंत्र बजता है और नृतक मतीरा फोड़ना, हल जोतना आदि क्रियाएँ करते हैं।

बम नृत्य

- इसमें बम वाद्य व रसिया गीत गाया जाता है इस कारण इसे बम रसिया नृत्य भी कहते है।
- भरतपुर-अलवर क्षेत्र में होली के अवसर पर नई फसल आने की खुशी में किया जाने वाला नृत्य जिसमें बड़े नगाड़े (बम) की ताल पर पुरुष तीन वर्गों में बँटकर नाचते हैं।
- इस नृत्य को गुर्जर जाति के अविवाहित लड़के करते हैं।
- बम रसिया में ढोल, मंजीरा, थाली, चिमटा वाद्य यंत्र काम में लिये जाते हैं ।

प्रश्न - राजस्थान के लोक नृत्य एवं उसके प्रचलन क्षेत्र के सम्बन्ध में निम्नलिखित में कौनसा युग्म सही नहीं है? (RAS 2012)

(a) गींदड़ नृत्य -शेखावाटी

(b) ढोल नृत्य -जालौर

(c) बमरसिया नृत्य - बीकानेर

(d) डांडिया नृत्य -मारवाड़

चरकूला नृत्य

- चरकूला नृत्य पूर्वी क्षेत्र विशेष रूप से भरतपुर जिले में किया जाता है ।
- यह ब्रज क्षेत्र में भी प्रसिद्ध है ।
- चरकूला नृत्य विशेष रूप से उत्तर प्रदेश का नृत्य है ।
- चरकूला नृत्य धातु के बर्तन पर दीपक जलाकर उसको सिर पर रखके महिलाएं करती हैं ।
- नृत्य करते समय महिलाएं हाथ में लोटा लिए होती हैं।
- आदमी इनके सामने ताली बजाते हुए नृत्य करते हैं ।
- प्रारंभ में यह नृत्य कृष्ण की राधा की स्मृति में बैलगाड़ी के पहिए पर 108 दीपक जलाकर किया जाता था ।

4. राजस्थान में किस तिथि को निंबार्क संप्रदाय का मेला सलेमाबाद अजमेर में लगता है ?
A. भाद्रपद कृष्ण अष्टमी
B. भाद्रपद शुक्ल अष्टमी
C. श्रावण कृष्ण अष्टमी
D. श्रावण शुक्ल अष्टमी (B)

5. चेटीचंड का पर्व किस माह में मनाया जाता है ?
A. चैत्र B. बैशाख
C. ज्येष्ठ D. आषाढ़ (A)

6. संकट चौथ के नाम से प्रसिद्ध तिल चौथ का त्यौहार कब मनाया जाता है ?
A. भाद्रपद कृष्ण चतुर्थी
B. माघ कृष्ण चतुर्थी
C. कार्तिक कृष्ण चतुर्थी
D. आश्विन कृष्ण चतुर्थी (B)

7. राजस्थान में सर्वाधिक बाल विवाह किस तिथि को होते हैं ?
A. वैशाख शुक्ल तृतीया
B. कार्तिक कृष्ण तृतीया
C. श्रावण कृष्ण चतुर्थी
D. फाल्गुन शुक्ल तृतीया (A)

8. देवउठनी ग्यारस कब मनाई जाती है ?
A. वैशाख शुक्ल एकादशी
B. चैत्र शुक्ल एकादशी
C. कार्तिक शुक्ल एकादशी
D. श्रावण शुक्ल एकादशी (c)

9. मोहिनी ग्यारस कब बनाई जाती है ?
A. वैशाख शुक्ल एकादशी
B. चैत्र शुक्ल एकादशी
C. कार्तिक शुक्ल एकादशी
D. श्रावण शुक्ल एकादशी (A)

10. अशोका अष्टमी कब मनाई जाती है?
A. वैशाख शुक्ल अष्टमी
B. चैत्र शुक्ल अष्टमी
C. कार्तिक शुक्ल अष्टमी
D. श्रावण शुक्ल अष्टमी (B)

अध्याय - 8

सामाजिक रीति - रिवाज, परम्पराएँ

➢ **सोलह संस्कार**

क्र. सं.	संस्कार
1.	गर्भाधान
2.	पुंसवन
3.	सीमन्तोन्नयन
4.	जातकर्म
5.	नामकरण
6.	निष्क्रमण
7.	अन्नप्राशन
8.	चूडाकर्म या जडूला
9.	कर्णवेध
10.	विद्यारम्भ
11.	उपनयन
12.	वेदारम्भ
13.	केशान्त या गोदान
14.	समावर्तन या दीक्षान्त
15.	विवाह
16.	अंत्येष्टि

➢ **गर्भाधान**
- जब किसी नव विवाहित महिला द्वारा गर्भाधारण किया जाता है इसकी जानकारी परिवार को होने पर उत्सव का आयोजन किया जाता है और महिलाओं द्वारा मांगलिक गीत गाये जाते है।
- इस प्रथा को मेवाड़ क्षेत्र में बढ़ूरात प्रथा के नाम से जाना जाता है ।

➢ **पुंसवन**
- गर्भधारण के तीन माह पश्चात गर्भ में पल रहे शिशु को पुत्र का रूप देने के लिए देवताओं की स्तुति कर पुत्र प्राप्ति एवं गर्भ सुरक्षा की कमाना करते है ।

➢ **सीमन्तोन्नयन**
- यह संस्कार गर्भ के छठवें और आठवें महीने में किया जाता है ।
- इस समय बच्चा सीखने के काबिल हो जाता है, बच्चे में अच्छे गुण, स्वभाव, और कर्म का ज्ञान आए इसके लिए माँ भी उसी प्रकार के व्यवहार करती है ।

➢ **जातकर्म**
- बालक के जन्म लेने पर यह संस्कार करने से शिशु के कई प्रकार के दोष दूर होते हैं ।

➢ **नामकरण**
- बच्चा पैदा होने पर ज्योतिषी से बच्चे का नामकरण करवाया जाता है।
- यह संसकरण प्रायः जन्म के ग्यारहवें दिन किया जाता है।

- पण्डित द्वारा जन्म घड़ी एवं नक्षत्रों के हिसाब से राशि का निर्धारण करते हुए नामकरण किया जाता है।
- कुल बारह राशियां होती है और प्रत्येक राशि में नौ नौ अक्षर होते है।
- इन अक्षरों में से ही किसी एक शुभ अक्षर से आरम्भ होने वाला नाम रख लिया जाता है।

➢ **निष्क्रमण**
- शिशु के जन्म के बाद चौथे माह में शिशु को पहली बार बहार निकलते है ।

➢ **अन्नप्राशन**
- बच्चे के 6-7 महीने की उम्र में दांत निकलने के समय यह संस्कार किया जाता है ।
- बच्चे को प्रारंभ में अन्न जैसे खीर, खिचड़ी, भात आदि दिया जाता है ।

➢ **चूड़ाकर्म या जड़ूला**
- जब बच्चा साल भर में अधिक बडा हो जाता है तब किसी शुभ दिन बच्चे के सिर के बाल उतारते हुये मुण्डन किया जाता है।
- सामान्यतः यह मुण्डन किसी तीर्थस्थल, देवस्थान, देवी देवताओं के मंदिर में सम्पन्न होता है।

➢ **कर्णवेध**
- इस संस्कार में बालक के कान को छेदा जाता है ।

➢ **विद्यारम्भ**
- बच्चे द्वारा सर्वप्रथम वर्ण अक्षर लिखा और पढ़ा जाना विद्यारम्भ संस्कार कहलाता है ।

➢ **उपनयन**
- इस संस्कार को यज्ञोपवित अथवा जनेऊ संस्कार भी कहते है ।
- जनेऊ तीन में सूत्र होते है ये तीन देवता - ब्रम्हा, विष्णु, महेश के प्रतीक है ।

➢ **वेदारम्भ**
- बालक गुरु के पास पहुचकर वेदों का आरम्भ करना वेदारम्भ कहलाता है ।

➢ **केशान्त या गोदान**
- बालक 16 वर्ष होने पर (किशोरावस्था से यौवनावस्था में प्रवेश करने पर) दाढ़ी और मूँछ को पहली बार कटाया जाता था।

➢ **समावर्तन या दीक्षान्त**
- शिष्य आश्रम या गुरुकुल से शिक्षा प्राप्त कर फिर से समाज में लाने के लिए यह संस्कार किया जाता है ।

➢ **विवाह**
- ब्रह्मचारी व्यक्ति के गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने पर यह संस्कार किया जाता है।

➢ **अंत्येष्टि**
- इस संस्कार का अर्थ है "अंतिम संस्कार " इंसान की मृत्यु के बाद शरीर अग्नि को समर्पित किया जाता है।

❖ **विवाह से सम्बंधित रीती - रिवाज**

➢ **सगाई**
- लड़का और लड़की का विवाह सम्बन्ध के लिए लड़के वालों की ओर से लड़की को रोकना या लड़की वालों को ओर से लडके को रोकना सगाई कहलाता है ।
- रोकना (वर और वधु पक्ष की ओर से कपड़े, आभूषण, मिठाईयाँ फल आदि वर और वधु के घर ले जाते हैं)

➢ **टीका**
- वधु पक्ष के लोग वर के घर जाकर वर को चेकी पर बिठाकर वर के तिलक करते है और नकदी, मिठाइयाँ और वस्त्र - आभूषण देते है ।

➢ **लग्न पत्रिका**
- सगाई एवं टीके की रस्म के बाद विवाह की तिथि निश्चित की जाती है।
- यह तिथि वर एवं वधू पक्ष की परस्पर सहमति से तय की जाती है।
- लग्न पत्रिका पण्डित द्वारा लिखी जाती है।
- जिसमें वर वधू के नाम, गौत्र सहित विवाह की तिथि, तोरण व पाणिग्रहण का समय आदि अंकित होता है।
- पंचाग के अनुसार ग्रह नक्षत्र देखकर वैवाहिक कार्यक्रम सम्बन्धी यह पत्रिका तैयार की जाती है।

➢ **कुमकुम पत्रिका**
- विवाह से कुछ दिन पूर्व वर एवं वधू पक्ष की ओर से केसर व कुमकुम से सज्जित निमंत्रण पत्रिकायें तैयार करवाई जाती है, जिनमें वैवाहिक कार्यक्रम अंकित होता है।
- इसमें वर वधु के नामों के साथ ही सम्बन्धित पक्ष के परिजनों के नाम अंकित होते है।
- प्रथम कुमकुम पत्रिका गणेश जी को भिजवाई जाती है।
- फिर दोनों पक्ष आपस में एक दूसरे की पत्रिकायें प्राप्त करते हैं फिर सम्बन्धित पक्ष के रिश्तेदारों, परिजनों, परिचतों, मित्रों आदि को भिजवाई जाती है।

➢ **विनायक पूजन**
- वधू पक्ष की ओर से वर पक्ष को लगन पत्रिका प्राप्त होते ही दोनो पक्षो द्वारा अपने अपने निवास पर विनायक की स्थापना की जाती है।
- प्रतिदिन वर वधु द्वारा विनायक की पूजा की जाती है। तथा विवाह के बाद गणेशजी उठा लिया जाते है और पूजा अर्चना प्रसाद के साथ विसर्जन कर दिया जाता है।

➢ **इकताई**
- दर्जी द्वारा शुभ मुहुर्त में वर व वधू के वस्त्रों का नाप लिया जाना इकताई कहलाता है।

➢ **बान (तेल) बैठाना**
- पाणिग्रहण की तिथि से पांच या सात दिन पूव्र बान ठिकाने की रस्म अदा की जाती है।
- वर एवं वधु को अपने अपने घरों पर चौकी पर बिठाकर पीठी, गेहूं व जौं का आटा, घी, हल्दी, मेंहन्दी आदि का मिश्रण की जाती है।

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से विभिन्न परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें - (Proof Video Link)

RAS PRE. 2021 - https://shorturl.at/qBJ18 (74 प्रश्न, 150 में से)

RAS Pre 2023 - https://shorturl.at/tGHRT (96 प्रश्न, 150 में से)

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6URO

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKjl4nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk8S6W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD - 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
RAS Mains 2021	October 2021	52% प्रश्न आये
RAS Pre. 2023	01 अक्टूबर 2023	96 प्रश्न (150 मेंसे)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)

whatsapp - https://wa.link/bc7sin 1 web.- https://bit.ly/ras-pre-notes

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO FREE SAMPLE

SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (1st Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

Our Selected Students

Approx. 137+ students selected in different exams. Some of them are given below -

Photo	Name	Exam	Roll no.	City
	Mohan Sharma S/O Kallu Ram	Railway Group - d	114195120370022	PratapNagar Jaipur
	Mahaveer singh	Reet Level- 1	1233893	Sardarpura Jodhpur
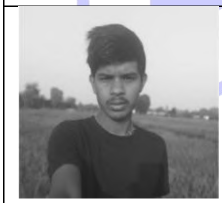	**Sonu Kumar Prajapati S/O Hammer shing prajapati**	SSC CHSL tier-1	2006018079	Teh.- Biramganj, Dis.- Raisen, MP
N.A	**Mahender Singh**	EO RO (81 Marks)	N.A.	teh nohar , dist Hanumangarh
	Lal singh	EO RO (88 Marks)	13373780	Hanumangarh
N.A	**Mangilal Siyag**	SSC MTS	N.A.	ramsar, bikaner

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	MONU S/O KAMTA PRASAD	SSC MTS	3009078841	kaushambi (UP)
	Mukesh ji	RAS Pre	1562775	newai tonk
	Govind Singh S/O Sajjan Singh	RAS	1698443	UDAIPUR
	Govinda Jangir	RAS	1231450	Hanumangarh
N.A	**Rohit sharma s/o shree Radhe Shyam sharma**	RAS	N.A.	Churu
	DEEPAK SINGH	RAS	N.A.	Sirsi Road , Panchyawala
N.A	**LUCKY SALIWAL s/o GOPALLAL SALIWAL**	RAS	N.A.	AKLERA , JHALAWAR
N.A	**Ramchandra Pediwal**	RAS	N.A.	diegana , Nagaur

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Monika jangir	RAS	N.A.	jhunjhunu
	Mahaveer	RAS	1616428	village-gudaram singh, teshil-sojat
N.A	**OM PARKSH**	RAS	N.A.	Teshil-mundwa Dis- Nagaur
N.A	**Sikha Yadav**	High court LDC	N.A.	Dis- Bundi
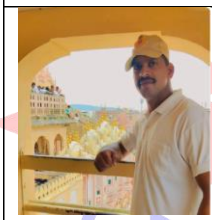	**Bhanu Pratap Patel s/o bansi lal patel**	Rac batalian	729141135	Dis.-Bhilwara
N.A	**mukesh kumar bairwa s/o ram avtar**	3rd grade reet level 1	1266657	JHUNJHUNU
N.A	**Rinku**	EO/RO (105 Marks)	N.A.	District: Baran
N.A.	**Rupnarayan Gurjar**	EO/RO (103 Marks)	N.A.	sojat road pali
	Govind	SSB	4612039613	jhalawad

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Jagdish Jogi	EO/RO (84 Marks)	N.A.	tehsil bhinmal, jhalore.
	Vidhya dadhich	RAS Pre.	1158256	kota

And many others……

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

Whatsapp करें – https://wa.link/bc7sin

Online order करें – https://bit.ly/ras-pre-notes

Call करें - 9887809083

FREE SAMPLE

whatsapp - https://wa.link/bc7sin 6 web.- https://bit.ly/ras-pre-notes